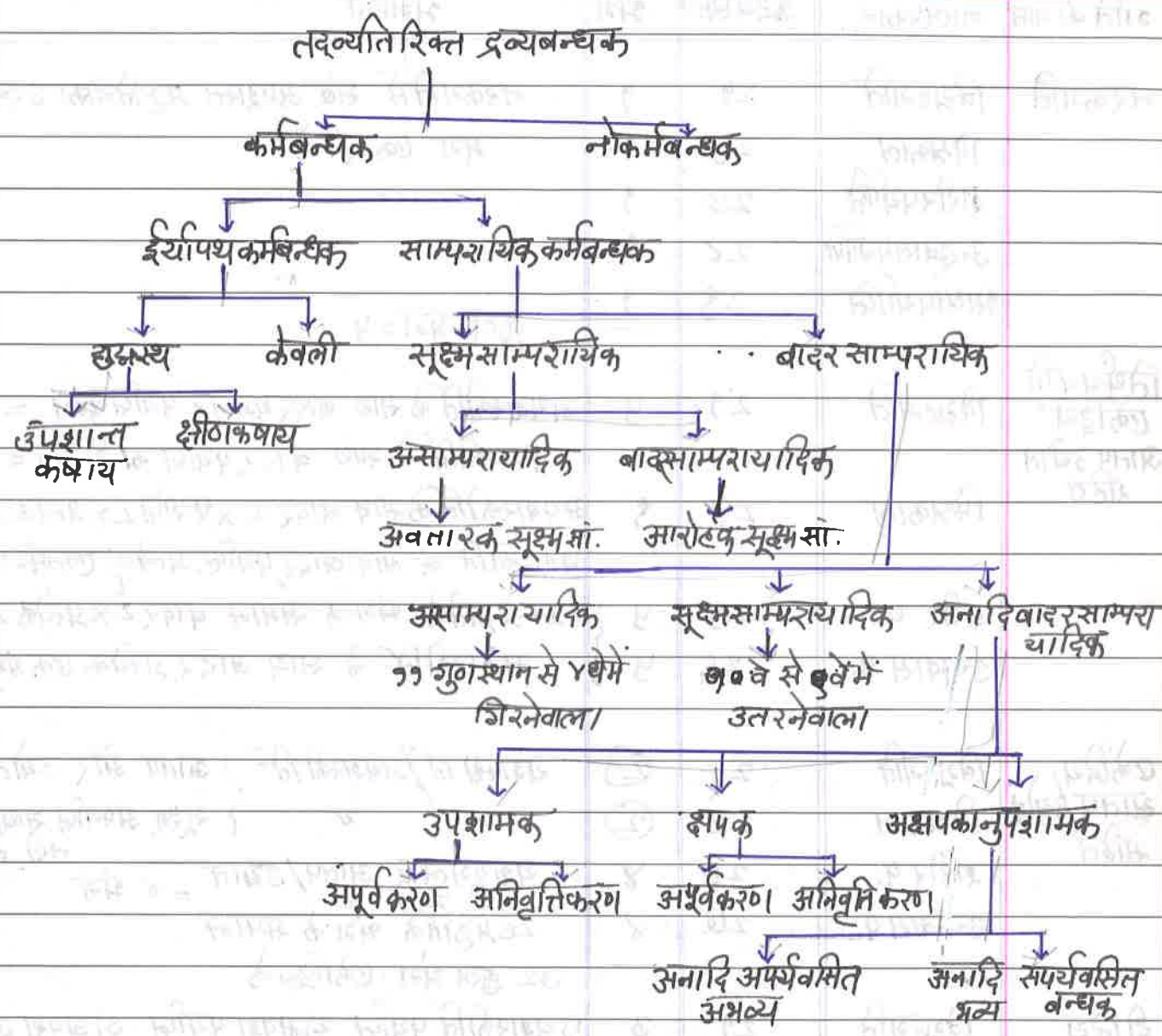


पृ. ५



- १) असाम्प्रथयादिक सूक्ष्मसाम्प्रथिक → असाम्प्रथ अर्थात् कषायरहित, ग्यारहवें गुणस्थानमें जीव कषायरहित होता है अतः उसे असाम्प्रथ कहते हैं। असाम्प्रथ जिसके आदिमें है ऐसा सूक्ष्मसाम्प्रथिक अर्थात् ग्यारहवें गुणस्थानसे १०वें गुणस्थानमें आये हुए जीवको असाम्प्रथयादिक सूक्ष्मसाम्प्रथिक कहते हैं।
- २) बादरसाम्प्रथयादिक सूक्ष्मसाम्प्रथिक → बादरसाम्प्रथ जिसके आदिमें है ऐसा सूक्ष्मसाम्प्रथिक अर्थात् नववें गुणस्थानसे दसवें गुणस्थानमें गये हुए जीवको बादरसाम्प्रथयादिक सूक्ष्मसाम्प्रथिक कहते हैं।
- ३) असाम्प्रथयादिक बादरसाम्प्रथयादिक → ग्यारहवें गुणस्थानसे मरण कर चौथे गुणस्थानमें गिरनेवाला जीव असाम्प्रथयादिक बादरसाम्प्रथयादिक है।
- ४) सूक्ष्मसाम्प्रथयादिक बादरसाम्प्रथयादिक → दसवें गुणस्थानसे नववें गुणस्थानमें उतरनेवाला जीव

टिप्पणी - जिस भंगसंख्या को गोल किया है वे भंग पुनरुक्त होनेसे गिनना नहीं है।

गीतिका नाम	कालप्रकार	उदयस्थान	भंग	भंगोंका विवरण
पंचेन्द्रिय उद्योत रहित	विग्रहगीति	29	9	सुभग 2 x आदेय 2 x यश 2 = 8 भंग पर्याप्तके कुर्मंग, अनादेय अचश = 9 भंग अपर्याप्तका
	मिश्रकाल	28	289	सुभग 2 x आदेय 2 x यश 2 x 6 संस्थान x 6 संलन = 288 पर्याप्तके अपर्याप्तका एक भंग 288 + 9 = 289
	शरीर प.	28	508	उपर्युक्त पर्याप्तके 288 x विहायोगति 2 = 508
	उच्छ्वास प.	29	508	उपर्युक्त 28 प्रकृतिके भंगके समान
	भाषा प.	30	9952	उपर्युक्त 508 x स्वरद्विक 2 = 9952 कुल भंग = 2802
पंचेन्द्रिय उद्योतरहित	विग्रहगीति	29	9	उपर्युक्त उद्योतरहितवत्
	मिश्रकाल	28	289	" "
	शरीर प.	29	508	उपर्युक्त उद्योतरहितके 28 प्रकृतिके भंगके समान
	उच्छ्वास प.	30	508	" " 28 " " "
	भाषा प.	39	9952	उपर्युक्त " 30 " " "
				कुल भंग 2305
मनुष्यगीति सामान्य मनुष्य	विग्रहगीति	29	9	सुभग 2 x आदेय 2 x यश 2 = 8 भंग पर्याप्तके 9 भंग अपर्याप्त
	मिश्रकाल	28	289	सुभग 2 x आदेय 2 x यश 2 x 6 संस्थान x 6 संलन = 288 पर्याप्तके, 9 भंग अपर्याप्तका
	शरीर प.	28	508	पूर्वोक्त 288 x विहायोगति 2 = 508
	उच्छ्वास प.	29	508	28 प्रकृतिके भंगके समान
	भाषा प.	30	9952	उपर्युक्त 508 x स्वरद्विक 2 = 9952 कुल भंग 2802
विशेष मनुष्य आहारक शरीर युक्त	मिश्रकाल	25	9	सभी प्रशस्त प्रकृतियोंका उदय होनेसे भंग नहीं है।
	शरीर प.	20	9	" " " " " "
	उच्छ्वास प.	28	9	" " " " " "
	भाषा प.	29	9	" " " " " "
				कुल भंग = 9
विशेष विशेष मनुष्य सामान्य केवल	कार्मणशरीर प्रतरा लोकशरीर	20	9	
	कपाट समुदाय	28	6	6 संस्थान के 6 भंग
	दंड समुदाय	28	12	6 संस्थान x 2 विहायोगति = 12 भंग
	उच्छ्वास प.	29	12	" " " " = 12 भंग
	भाषा प.	30	24	" " x " x 2 स्वर = 24 भंग
				कुल भंग = 9
				58 कुल भंग

गति का नाम	कालप्रकार	उदय स्थान	भंग	भंगोंका विवरण
तीर्थंकर केवली	स्त्री प्रतर, लोकप्रण	29	9	समन्वतुरस्र संस्थान काली उदय होता है। और प्रबास्त विलयोगति का ही उदय है। " , सुस्वर का ही उदय है
	कपाट समु	26	9	
	दंडे समु.	28	9	
	उच्छवास	30	9	
	भाषा.प.	39	9	
	अयोगकेवली	5	9	
—				६ तीर्थंकरके कुल भंग
देवगति	विग्रहगति	29	9	प्रबास्त प्रकृतियों का ही उदय होनेसे एक ही भंग है। " देवगतिके कुल भंग ५
	मिद्मकाल	25	9	
	शरीर प.	26	9	
	उच्छवासप.	28	9	
	भाषा प.	29	9	

नरक गति के कुल भंग ५

तिर्य्य " " " ४९९२ = एकेंद्रिय ३२ + विकल्पत्रय ५४ + पंचेंद्रिय ४९०६

मनुष्य " " " २६६८ = सा.मनुष्य २६०२ + विशेषमनुष्य ४ + ५६ + ६

देव " " " ५ विशेषविशेष

चारों गतिके कुल " ७६७०

भंगोंके विषयमें निश्चय करानेके लिये पांच प्रकारसे वर्णन करते हैं।

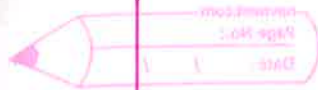
१) संख्या २) प्रस्तार ३) परिवर्तन ४) नष्ट ५) समुद्दिष्ट

१) संख्या → भंगोंकी कुल संख्या उत्पन्न करना।

सभी पूर्ववर्ती भंग उत्तरवर्ती प्रत्येक भंगमें मिलते हैं इसलिए उनका क्रमसे गुणाकार करनेपर संख्या उत्पन्न होती है।

जहांपर सुभंग दुर्भंग, आदेय अनादेय, यश अयश, संस्थान ६, संलक्षण ६ इनके भंग निकालना है इसलिए $2 \times 2 \times 2 \times 6 \times 6 = 288$ भंगोंकी संख्या

२) प्रस्तार - भंगोंकी संख्याको स्थापन करना प्रस्तार है। इसमें दो प्रकार हैं।
प्रथम प्रस्तार → प्रथम प्रकृति प्रमाणको एक एक विरलन कर रचना उस प्रत्येक के उपर दूसरे प्रकृति पिंड को रचना।



आदेय अनादेय आदेय अनादेय

जैसे - द्वितीय प्रकृति 2 2
 प्रथम प्रकृति 9 9 $2+2=4$
 सुभग दुर्भग इनका जोड़ करके जो संख्या हो उसके
 प्रथम संज्ञाना और कादके प्रकृतिपिंड को द्वितीय संज्ञाना ऐसे अंत तक
 करते जाना 2 2 2 2 द्वितीय प्रकृति (यश अथवा) इनका जोड़ = 4
 9 9 9 9 प्रथम प्रकृति
 8 8 8 8 8 8 8 8 8 द्वितीय (संस्थान) इनका जोड़ = 8
 9 9 9 9 9 9 9 9 9 - प्रथम

8 8 8 8 8 8 8 8 8 द्वितीय (संज्ञान) इनका जोड़ = 2 2 2
 9 9 9 9 9 9 9 9 9 - - - 8 8 बार

द्वितीय प्रस्तारकी अपेक्षा → दूसरे प्रकृतिपिंडका जितना प्रमाण है उतनी बार प्रथम प्रकृतिपिंडको रखकर उसके प्रत्येक के ऊपर द्वितीय पिंडको रखना।
 पुनः इनके जोड़को प्रथम संज्ञान आगेके पिंडको द्वितीय संज्ञाना।

द्वितीय प्रकृति आदेय अनादेय 9 9 इनका जोड़ = 2+2=4 प्रथमपिंड
 प्रथम प्रकृति सुभग दुर्भग सुभग दुर्भग 2 2 आगेका द्वितीय पिंड 2 (यश अथवा)
 अतः 9 9 द्वितीय इनका जोड़ = 4+4=8 प्रथमपिंड
 8 8 प्रथम द्वितीय पिंड 8 (संस्थान) है अतः

द्वितीय 9 9 9 9 9 9 9 (संस्थान) इनका जोड़ 8 8 प्रथमपिंड
 प्रथम 4 4 4 4 4 4 4 द्वितीय पिंड 8 संज्ञान है अतः
 द्वितीय 9 9 9 9 9 9 9 (संज्ञान)
 प्रथम 8 8 8 8 8 8 8

इन सबका जोड़ 2 2 2 होता है।

3) परिवर्तन → अक्षसंघारको अक्षपरिवर्तन कहते हैं।
 प्रथम प्रस्तारकी अपेक्षा → जब तृतीय अक्ष क्रमसे अन्त तक जाकर व फिरसे लौटकर एक साथ अपने प्रथम स्थानको प्राप्त हो जाता है तब द्वितीय अक्ष अपने दूसरे स्थानको प्राप्त होता है इसप्रकार तीसरा और दूसरा प्रथम अक्ष अन्तको प्राप्त होकर फिरसे लौटकर जब अपने अपने प्रथम स्थानको प्राप्त होते हैं तब प्रथम अक्ष प्रथम स्थानको छोड़कर द्वितीय स्थानको प्राप्त होता है।

इस प्रकार आगे भी अक्षसंचार जानना ।

इसके प्रथम प्रस्तारकी अपेक्षा भंग →

1)	सुभगा	आदेय	यशस्कीर्ति	समचतुरस्र	वज्रवृषभनाराय संहनन
2)	"	"	"	"	वज्रनाराय "
3)	"	"	"	"	नाराय "
4)	"	"	"	"	अर्धनाराय "
5)	"	"	"	"	कीलित "
6)	"	"	"	"	असंप्राप्ता सुपाटिका "
7)	"	"	"	न्यग्रोध	वज्रवृषभनाराय "
8)	"	"	"	"	वज्रनाराय "
9)	"	"	"	"	अर्धनाराय "
10)	"	"	"	"	कीलित अर्धनाराय
11)	"	"	"	"	कीलित
12)	"	"	"	"	असंप्राप्ता सुपाटिका
13-18)	"	"	"	स्वाति	वज्रवृषभसे लेकर असंप्राप्ता सुपाटिका तक १ २ ३ ४ ५ ६ संहनन
19-24)	"	"	"	कुब्जक	" " " " " "
25-30)	"	"	"	वामन	" " " " " "
31-36)	"	"	"	दुष्टक	" " " " " "
37-42)	"	"	अयशस्कीर्ति	समचतुरस्र	वज्रवृषभनाराय संहनन से असंप्राप्ता तक १ २ ३ ४ ५ ६
43-48)	"	"	"	न्यग्रोध	" " " " " "
49-54)	"	"	"	स्वाति	" " " " " "
55-60)	"	"	"	कुब्जक	" " " " " "
61-66)	"	"	"	वामन	" " " " " "
67-72)	"	"	"	दुष्टक	" " " " " "
73-78)	"	"	अनादेय यशस्कीर्ति	समचतुरस्र	वज्रवृषभनाराय संहनन से असंप्राप्ता तक १ २ ३ ४ ५ ६
79-84)	"	"	"	न्यग्रोध	" " " " " "
85-90)	"	"	"	स्वाति	" " " " " "
91-96)	"	"	"	कुब्जक	" " " " " "
97-102)	"	"	"	वामन	" " " " " "
103-108)	"	"	"	दुष्टक	" " " " " "
109-114)	"	"	अयशस्कीर्ति	समचतुरस्र	" " " " " "
115-120)	"	"	"	न्यग्रोध	" " " " " "

929-932	सुभग	अनादेय	अयशस्कीर्ति	स्वाति	संलग्न	9	2	3	4	5	6
926-932	"	"	"	कुब्जक	"	"	"	"	"	"	"
933-934	"	"	"	वामन	"	"	"	"	"	"	"
935-948	"	"	"	हुण्डक	"	"	"	"	"	"	"

949 से 200 तक दुर्भग के साथ सुभग के समान जानना। केवल सुभग के स्थान पर दुर्भग लिखना।

द्वितीय प्रस्तार की अपेक्षा अक्षपरिवर्तन

प्रथम अक्ष जब अन्त तक पहुँचकर पुनः आदि स्थान पर आता है तब दूसरा अक्ष भी संक्रमण करता है अर्थात् प्रथम स्थान को छोड़कर द्वितीय स्थान पर जाता है इस प्रकार जब दोनों अक्ष अन्तस्थान को पहुँचकर आदिको प्राप्त हो जाते हैं तब तृतीय अक्ष संक्रमण करता है इसी प्रकार आगे भी जानना।

इसकी अपेक्षा भंग

- 1) सुभग, आदेय, यशस्कीर्ति, सम्यक्संस्थान, वज्रवृषभनारायसंलग्न।
- 2) दुर्भग, " " " " " "
- 3) सुभग, अनादेय, " " " "
- 4) दुर्भग, " " " " " "
- 5) सुभग, आदेय, अयशस्कीर्ति, " " " "
- 6) दुर्भग, " " " " " "
- 7) सुभग, अनादेय, " " " " " "
- 8) दुर्भग, " " " " " "

उपरोक्त 8 के समान - 9E

96-28	"	"	"	स्वाति	"
29-32	"	"	"	कुब्जक	"
33-40	"	"	"	वामन	"
49-54	"	"	"	हुण्डक	"
9-44 के समान 49-54	"	"	"	6 संस्थान	वज्रनाराय संलग्न
96-948	"	"	"	"	नाराय संलग्न
949-952	"	"	"	"	अर्धनाराय "
953-200	"	"	"	"	कीलित "
201-200	"	"	"	"	असंभ्राप्ता सृष्टिका

4) नष्ट → संख्या रखकर भंग निकालनेको नष्ट कहते हैं।

नष्ट निकालनेकी रीति →

जितनेवा भंगस्थान जानना अभीष्ट हो उस संख्याको प्रथम पिंडसे (जिसका प्रथम अक्षसंचार करते हैं उसे यहां प्रथम पिंड समझना) भाग देकर जो शेष रहे उस स्थानपर अक्ष समझना। पुनः लब्धमें एक अंक मिलाकर दूसरे पिंडप्रमाण से भाग देवे जो शेष रहे उस स्थानपर दूसरा अक्ष समझना। इसप्रकार आगे भी करते जाना जहां भाग देनेपर कुछ शेष न रहे तो अंतिम स्थानपर अक्ष है ऐसा समझना वहां लब्धमें एक अंक नहीं मिलाना।

प्रथम प्रस्तारकी अपेक्षा 982 वा भंग कौनसा है ?

संलग्न 6) 982 (23	23+9=28	6) 28 (7	2) 8 (2
$\begin{array}{r} 92 \\ 22 \\ \hline 92 \\ 0 \end{array}$		$\begin{array}{r} 28 \\ 0 \end{array}$	$\begin{array}{r} 8 \\ 0 \end{array}$
4 - अर्धनाराच		हुंडक संस्थान	अयशा

2) 2 (9	2) 9 (सुभग
$\begin{array}{r} 2 \\ 0 \end{array}$	
0 - अनादेय	

982 वा भंग सुभग, अनादेय, अयशा, हुंडक संस्थान, अर्धनाराच संलग्न

द्वितीय प्रस्तारकी अपेक्षा 980 वा भंग

2) 980 (60	2) 60 (34	2) 34 (96	96+9=92
$\begin{array}{r} 98 \\ 00 \end{array}$	$\begin{array}{r} 60 \\ 00 \end{array}$	$\begin{array}{r} 2 \\ 94 \\ 92 \end{array}$	
दुर्भग	अनादेय	धराकीर्ति	

संस्थान 6) 92 (3	संलग्न 8) 3 (
$\begin{array}{r} 92 \\ 0 \end{array}$	नाराच संलग्न
हुंडक संस्थान	

980 वा भंग → दुर्भग, अनादेय, धराकीर्ति, हुंडक संस्थान, नाराच संलग्न

5) समुद्दिष्ट → भंग रखकर संख्या निकालना उसे समुद्दिष्ट कहते हैं।

समुद्दिष्ट निकालनेकी रीति →

एक अंकको रखकर उपरके पिंड के प्रमाणसे गुणा करे और जो लब्ध आवे उसमेंसे अनंकित संख्या को घटा दे ऐसे प्रथम पिंडके अंत तक करते जाये तो समुद्दिष्ट निकलता है।

अनंकित = अक्ष जिस स्थान पर है उसे आगे जितने भेद शेष है उस संख्या को अनंकित कहते हैं जैसे न्यग्रोधरिमंडल संस्थान पर अक्ष है तो आगे ४ भेद शेष है इसलिए अनंकित संख्या ४ है। अंतिम भेद हो तो अनंकित शून्य समझना।

प्रथम प्रस्तार की अपेक्षा -

अर्धनाराचसंहनन, हुंडक संस्थान, अयश, अनादेय, सुभग यह भंग कितनेवा है ?

- १ × २ = २ - १ = १ अक्ष सुभग पर होनेसे अनंकित १ है
- १ × २ = २ - ० = २ अक्ष अनादेय पर होनेसे अनंकित ० है।
- २ × २ = ४ - ० = ४ अक्ष अयश " " " " " "
- ४ × ६ = २४ - ० = २४ " हुंडक " " " " " "
- २४ × ६ = १४४ - २ = १४२ " अर्धनाराच पर " " २ है।

द्वितीय प्रस्तार की अपेक्षा -

दुर्भग, अनादेय, यशकीर्ति, हुंडक संस्थान, नाराचसंहनन कितनेवा भंग है ?

- १ × ६ = ६ - ३ = ३ अक्ष तिसरे संहनन पर होनेसे अनंकित संख्या ३ है।
- ३ × ६ = १८ - ० = १८ " छठे संस्थान पर " " " ० "
- १८ × २ = ३६ - १ = ३५ " प्रथम यश " " " १ "
- ३५ × २ = ७० - ० = ७० " अंतिम स्थान पर " " " ० "
- ७० × २ = १४० - ० = १४० " " " " " " ० "

प्रथम प्रस्तार की अपेक्षा गूढयंत्र

द्वितीय प्रस्तार की अपेक्षा गूढयंत्र

वज्रर्षभ	वज्रनाराच	नाराच	अर्धनाराच	कीलित	असंप्राप्त	सुभग	दुर्भग
१	२	३	४	५	६	१	२
समयतुरस्र	न्यग्रोध	स्वाति	कुब्जक	वामन	हुंडक	आदेय	अनादेय
०	६	१२	१८	२४	३०	०	२
अयश	अयश					यश	अयश
०	३६					०	४
आदेय	अनादेय					समयतुरस्र	न्यग्रोध
०	७२					०	८
						१६	२४
सुभग	दुर्भग					३२	४०
०	१४४					१४४	१९२
						२४०	२४०

इस गूढयंत्र से भी नष्ट और समुद्धिष्ट निकालना सरल है ।

नष्ट निकालने की शक्ति →

१४२ वा भंग कौनसा है । जिन जिन कोष्ठों में स्थित अंक और शून्यों जोड़नेपर संख्या निकलती है उस उस स्थान का भेद लेना ।

$$0 + 62 + 3E + 30 + 8 = 982$$

सुभग + अनादेय अथवा हुंडक अर्धनाराय

उद्धिष्ट निकालने की शक्ति

जो भंग कहा है उस उन भंगोंके कोष्ठक में स्थित अंकोको व शून्योंको जोड़नेसे भंगसंख्या निकलती है

पृ. ११५-११८

एक जीवकी अपेक्षा कालानुगम

पटल क्र.	अधन्य आयु	वृद्धिका प्रभाव	उत्कृष्ट आयु
प्रथम पृथिवी			
प्रथम पटल	१०,००० वर्ष		९०,००० वर्ष
द्वितीय पटल	९०,००० वर्ष		९०,०००,००० वर्ष
तृतीय पटल	९०,०००,००० वर्ष		असंख्यात पूर्व कोरी
चतुर्थ पटल	असंख्यात पूर्व कोरी		सागरोपम अर्थात् $\frac{9}{90}$
पंचम पटल	$\frac{9}{90}$	+ $\frac{9}{90}$	$\frac{2}{90}$ सागरोपम
षष्ठ पटल	$\frac{2}{90}$	+ $\frac{9}{90}$	$\frac{3}{90}$ सागरोपम
सप्तम पटल	$\frac{3}{90}$	+ $\frac{9}{90}$	$\frac{8}{90} = \frac{2}{5}$ सागरोपम
अष्टम पटल	$\frac{4}{90}$	+ $\frac{9}{90}$	$\frac{4}{90} = \frac{9}{2}$ सागरोपम
नवम पटल	$\frac{5}{90}$	+ $\frac{9}{90}$	$\frac{6}{90} = \frac{3}{5}$ सागरोपम
दशम पटल	$\frac{6}{90}$	+ $\frac{9}{90}$	$\frac{6}{90} =$ सागरोपम
एकादश पटल	$\frac{6}{90}$	+ $\frac{9}{90}$	$\frac{6}{90} = \frac{8}{5}$ सागरोपम
द्वादश पटल	$\frac{6}{90}$	+ $\frac{9}{90}$	$\frac{8}{90} =$ सागरोपम
त्रयोदश पटल	$\frac{8}{90}$	+ $\frac{9}{90}$	$\frac{9}{90} = 9$ सागरोपम

प्रथम पृथ्वी में कुल तेरह परत हैं उनमें से चार परतों की उत्कृष्ट आयु बतायी है। नउ परतों की उत्कृष्ट आयु का प्रमाण निकालना है अतः प्रथम पृथ्वी में पद का प्रमाण ९ ही लेना वृद्धि का प्रमाण निकालने के लिए त्रैराशिक

प्रमाण	फलराशि	इच्छाराशि
९ परतों पर	$\frac{९}{१०}$ सागरोपम की वृद्धि तो एक परत पर कितनी वृद्धि ?	
९	$\frac{९}{१०}$	१

$$\frac{\text{फल} \times \text{इच्छा}}{\text{प्रमाण}} = \frac{९}{१०} \times \frac{१}{९} = \boxed{\frac{१}{१०}} \text{ प्रथम पृथ्वी में प्रत्येक परत पर वृद्धि का प्रमाण}$$

अथवा वृद्धि निकालने का सूत्र

$$\frac{\text{भूमि} - \text{मुख}}{\text{पद}} = \text{वृद्धि का प्रमाण}$$

$$\begin{aligned} \text{भूमि} &= \text{अंत का प्रमाण} = १ \text{ सागरोपम} \\ \text{मुख} &= \text{आदि का प्रमाण} = \frac{१}{१०} \\ \text{पद} &= ९ \end{aligned}$$

$$\frac{१ - \frac{१}{१०}}{९} = \frac{१० - १}{१०} = \frac{९}{१०} \times \frac{१}{९} = \boxed{\frac{१}{१०}} \text{ वृद्धि का प्रमाण}$$

छठे चतुर्थ परत की उत्कृष्ट आयु में वृद्धि का प्रमाण जोड़ने पर पंचम परत की उत्कृष्ट आयु का प्रमाण आता है।

चतुर्थ परत की उत्कृष्ट आयु $\frac{१}{१०}$ सा. + वृद्धि का प्रमाण $\frac{१}{१०} = \frac{२}{१०}$ पंचम परत उत्कृष्ट आयु. इसी प्रकार शेष परतों की उत्कृष्ट आयु का प्रमाण निकालना

द्वितीयादि पृथ्वी में वृद्धि का प्रमाण

पृथ्वी क्र.	भूमि	मुख	परत संख्या	वृद्धि का प्रमाण
द्वितीय पृथ्वी	३ सा.	१ सा.	११	$(३-१) \div ११ = \frac{२}{११}$
तृतीय पृथ्वी	७ सा.	३ सा.	९	$(७-३) \div ९ = \frac{४}{९}$
चतुर्थ पृथ्वी	१० सा.	७ सा.	७	$(१०-७) \div ७ = ३/७$
पंचम पृथ्वी	१७ सा.	१० सा.	५	$(१७-१०) \div ५ = ७/५ = १ \frac{२}{५}$
छठी पृथ्वी	२२ सा.	१७ सा.	३	$(२२-१७) \div ३ = ५/३$
सातवी पृथ्वी	३३ सा.	२२ सा.	१	$(३३-२२) \div १ = ११$

किसी भी परत की आयुप्रमाण निकालने के लिए सूत्र

$$\text{वृद्धि} \times \text{परतसंख्या} + \text{मुख} = \text{वृद्धिफल}$$

प्रथम पृथिवी में चौथे परत की आयु - मुख का प्रमाण है।

सातवें परत अर्थात् तीसरे परत की आयु का प्रमाण

$$\frac{9}{90} \times 3 + \frac{9}{90} = \frac{3}{90} + \frac{9}{90} = \frac{12}{90} \text{ सातवें परत की आयु का प्रमाण}$$

पृ 999-920

द्वितीय पृथिवी के परतों में उत्कृष्ट आयु का प्रमाण →

परत क्रमांक	पूर्व परत की आयु	+ वृद्धि का प्रमाण	अन्तर परत की आयु
1	9 सा.	+ 2/99	9 2/99 सागरोपम
2	9 2/99 सा.	+ 2/99	9 4/99 "
3	9 4/99 सा.	+ 2/99	9 6/99 "
4	9 6/99 सा.	+ 2/99	9 8/99 "
5	9 8/99 सा.	+ 2/99	9 10/99 "
6	9 10/99 सा.	+ 2/99	9 12/99 = 2 2/99 सा.
7	2 2/99 सा.	+ 2/99	2 4/99 सा.
8	2 4/99 सा.	+ 2/99	2 6/99 सा.
9	2 6/99 सा.	+ 2/99	2 8/99 सा.
10	2 8/99 सा.	+ 2/99	2 10/99 सा.
11	2 10/99 सा.	+ 2/99	2 12/99 = 3 सागरोपम.

अथवा उपर्युक्त सूत्रानुसार

$$\text{वृद्धि} \times \text{परतसंख्या} + \text{मुख} = \text{विवक्षित परत की आयु}$$

$$\frac{2}{99} \times 5 + 9 \text{ सा.} = \frac{10}{99} + 9 \text{ सा.} = 9 \frac{10}{99} \text{ पंचम परत की आयु}$$

तृतीय पृथिवी के परतों में उत्कृष्ट आयु का प्रमाण पूर्वोक्त सूत्रानुसार

परत क्रमांक	मुख	+ वृद्धि × परतसंख्या	= विवक्षित परत आयु
1	3 सा.	$+ \frac{4}{3} \times 1$	$= 3 \frac{4}{3}$ सा.
2	3 सा.	$+ \frac{4}{3} \times 2$	$= 3 \frac{8}{3}$ सा.
3	3 सा.	$+ \frac{4}{3} \times 3$	$= 3 + \frac{12}{3} = 4 \frac{3}{3}$ सा.
4	3 सा.	$+ \frac{4}{3} \times 4$	$= 3 \frac{16}{3} = 4 \frac{10}{3}$ सा.
5	3 सा.	$+ \frac{4}{3} \times 5$	$= 3 \frac{20}{3} = 4 \frac{14}{3}$ सा.
6	3 सा.	$+ \frac{4}{3} \times 6$	$= 3 \frac{24}{3} = 5 \frac{18}{3}$ सा.
7	3 सा.	$+ \frac{4}{3} \times 7$	$= 3 \frac{28}{3} = 5 \frac{22}{3}$ सा.
8	3 सा.	$+ \frac{4}{3} \times 8$	$= 3 \frac{32}{3} = 6 \frac{26}{3}$ सा.
9	3 सा.	$+ \frac{4}{3} \times 9$	$= 3 \frac{36}{3} = 7$ सागरोपम.

चतुर्थ पृथिवी के परतों में उत्कृष्ट आयु का प्रमाण

परत क्रमांक	मुख	+ वृद्धि × परतसंख्या	विवक्षित परत की उ. आयु
1 आर	6 सा.	$+ \frac{3}{6} \times 1$	$= 6 \frac{3}{6}$ सा.
2 भार	6 सा.	$+ \frac{3}{6} \times 2$	$= 6 \frac{6}{6}$ सा.
3 भार	6 सा.	$+ \frac{3}{6} \times 3$	$= 6 \frac{9}{6} = 7 \frac{3}{6}$
4 वान्त	6 सा.	$+ \frac{3}{6} \times 4$	$= 6 \frac{12}{6} = 7 \frac{6}{6}$
5 तम	6 सा.	$+ \frac{3}{6} \times 5$	$= 6 \frac{15}{6} = 8 \frac{3}{6}$
6 रवात	6 सा.	$+ \frac{3}{6} \times 6$	$= 6 \frac{18}{6} = 8 \frac{6}{6}$
7 खातसात	6 सा.	$+ \frac{3}{6} \times 7$	$= 6 \frac{21}{6} = 6 + 3 = 9$ सा.

पांचवी पृथिवी के परतों में उत्कृष्ट आयु का प्रमाण

परत क्र. व नाम	मुख	+ वृद्धि प्रमाण × परत संख्या	= विवक्षित परत उत्कृष्ट आयु
१ तम	१० सा.	$+ १ \frac{२}{५} \times १$	$= ११ \frac{२}{५}$ सा.
२ द्वि	१० सा.	$+ \frac{७}{५} \times २$	$= १० + \frac{१४}{५} = १२ \frac{४}{५}$ सा.
३ त्रि	१० सा.	$+ \frac{७}{५} \times ३$	$= १० + \frac{२१}{५} = १४ \frac{१}{५}$ सा.
४ चतु	१० सा.	$+ \frac{७}{५} \times ४$	$= १० + \frac{२८}{५} = १५ \frac{३}{५}$ सा.
५ पंचम	१० सा.	$+ \frac{७}{५} \times ५$	$= १० + \frac{३५}{५} = १७$ सागरोपरम

छठी पृथिवी के परतों में उत्कृष्ट आयु.

परत क्र.	मुख	वृद्धि × परत क्र.	विवक्षित परत की उत्कृष्ट आयु
१	१७ सा.	$+ \frac{५}{३} \times १$	$= १७ \frac{५}{३} = १८ \frac{२}{३}$ सा.
२	१७ सा.	$+ \frac{५}{३} \times २$	$= १७ \frac{१०}{३} = २० \frac{२}{३}$ सा.
३	१७ सा.	$+ \frac{५}{३} \times ३$	$= १७ \frac{१५}{३} = १७ + ५ = २२$

सातवी पृथिवी में एक ही परत है जधन्य आयु २२ सा. + १ समय, उत्कृष्ट आयु = ३३ सा.

जधन्य आयु = पूर्व के परत की उत्कृष्ट आयु + १ समय

पृ. १२९-१३५. सौधर्मयुगलादि में परतों में आयुवृद्धि का प्रमाण

स्वर्गयुगल	उत्कृष्ट आयु - जधन्य आयु = अवशेषप्रमाण ÷ गच्छ = वृद्धिप्रमाण
सौधर्मशान	$\frac{५}{२}$ सा. - $\frac{१}{२}$ सा. = $\frac{४}{२} = २ \div ३० = \frac{२}{३०} = \frac{१}{१५}$ सा.
सानकुमारमोहन्द्र	$\frac{१५}{२}$ सा. - $\frac{५}{२}$ सा. = $\frac{१०}{२} = ५ \div ७ = \frac{५}{७}$ सा.
प्रलप्रलोत्तर	$\frac{२१}{२}$ सा. - $\frac{१५}{२}$ सा. = $\frac{६}{२} = ३ \div ४ = \frac{३}{४}$ सा.
लोन्तव कापिष्ठ	$\frac{२९}{२}$ सा. - $\frac{२१}{२}$ सा. = $\frac{८}{२} = ४ \div २ = \frac{४}{२} = २$ सा.
शुक्र मलाशुक्र	$\frac{३३}{२}$ सा. - $\frac{२९}{२}$ सा. = $\frac{४}{२} = २ \div १ = २$ सा.
शतार सहस्रार	$\frac{३७}{२}$ सा. - $\frac{३३}{२}$ सा. = $\frac{४}{२} = २ \div १ = २$ सा.
आनत प्राणत	$\frac{५०}{२}$ सा. - $\frac{३७}{२}$ सा. = $\frac{१३}{२} = \frac{१३}{२} \div ३ = \frac{३}{२} = \frac{३}{२} = \frac{१}{२}$ सा.
आरण अच्युत	२२ सा. - २० सा. = २ ÷ ३ = $\frac{२}{३}$ सा.

देवोंमें जघन्य उत्कृष्ट आयु और परल संख्या

देवोंका नाम	जघन्य आयु	उत्कृष्ट आयु	परल संख्या
भवनवासी	१०,००० वर्ष	१ सागरोपम + $\frac{1}{2}$ सागर	
व्यन्तरवासी	१०,००० वर्ष	१ पत्थ + $\frac{1}{2}$ पत्थ	
ज्योतिष्कवासी	पत्थोपम = ८	१ पत्थ + $\frac{1}{2}$ सागर	
सौधर्म ऐशान	१ $\frac{1}{2}$ पत्थोपम	२ $\frac{1}{2}$ सागरोपम	३१
मानकुमार महेंद्र	२ $\frac{1}{2}$ सागरोपम	७ $\frac{1}{2}$ सागरोपम	८
ब्रह्म ब्रह्मोत्तर	७ $\frac{1}{2}$ सागरोपम	१० $\frac{1}{2}$ सागरोपम	४
लान्तव कापिष्ठ	१० $\frac{1}{2}$ सागरोपम	१४ $\frac{1}{2}$ सागरोपम	२
शुक्र महाशुक्र	१४ $\frac{1}{2}$ "	१६ $\frac{1}{2}$ "	१
शतार सहस्रार	१६ $\frac{1}{2}$ "	१८ $\frac{1}{2}$ "	१
मानल प्राणल	१८ $\frac{1}{2}$ "	२० सागरोपम	३
आरण अच्युत	२० सा. + १ समय	२२ सागरोपम	३
१. त्रैवेयक सुदर्शन	२२ सा. + "	२३ "	
२ त्रैवेयक अमोघ	२३ सा. + "	२४ "	
३ त्रैवेयक सुप्रबुध	२४ सा. + "	२५ "	
४ " यशोधर	२५ सा. + "	२६ "	
५ " सुभद्र	२६ सा. + "	२७ "	
६ " विशाल	२७ सा. + "	२८ "	
७ " सुमनस	२८ सा. + "	२९ "	
८ " सौमनस	२९ सा. + "	३० "	
९ " प्रीतिकर	३० सा. + "	३१ "	
नेव अनुदिश	३१ सा. + "	३२ "	
धार अनुतर	३२ सा. + "	३३ "	
सर्वार्थसिद्धि	३३ सागरोपम	३३ "	

सौधर्म ऐशान स्वर्गमें ३१ परल है किन्तु प्रथम परलमें वृद्धिका प्रमाण नहीं निकालना है ३० परलोंकी आयुका प्रमाण निकालना है इसलिए वहां गच्छ ३० लेना। अन्य स्वर्गोंमें जितने परल है उतना गच्छ जानना। सौधर्म ऐशान स्वर्गमें जो वृद्धिका प्रमाण निकाला है उसे प्रथम परलकी आयु में जोड़नेसे दूसरे परलकी आयुका प्रमाण निकलता है ऐसे ही सर्वत्र पूर्व परलकी आयुमें वृद्धि का प्रमाण जोड़नेसे उत्तरोत्तर परलोंकी आयुका प्रमाण निकलता है।

पटल संख्या व नाम पूर्व पटल आयु वृद्धिप्रमाण लब्ध = उत्तर पटल की उत्कृष्ट आयु

1 शुकु	$\frac{9}{2}$ सा.		
2 विमल	$\frac{12}{2}$ सा.	$+\frac{2}{30}$ सा.	$\frac{1 \times 12 + 2 \times 1}{30} = \frac{14}{30} = \frac{7}{15}$ सा.
3 चन्द्र	$\frac{16}{30}$	$+\frac{2}{30}$	$\frac{16+2}{30} = \frac{18}{30}$ सा.
4 पल्लु	$\frac{19}{30}$	$+\frac{2}{30}$	$\frac{19+2}{30} = \frac{21}{30}$ सा. = $\frac{7}{10}$ सा.
5 वीर	$\frac{21}{30}$	$+\frac{2}{30}$	$\frac{21+2}{30} = \frac{23}{30}$ सा. =
6 अरुण	$\frac{23}{30}$	$+\frac{2}{30}$	$\frac{23+2}{30} = \frac{25}{30} = \frac{5}{6}$ सा. = $\frac{5}{6}$ सा.
7 नन्दन	$\frac{24}{30}$	$+\frac{2}{30}$	$\frac{24+2}{30} = \frac{26}{30}$ सा. = $\frac{13}{15}$ सा.
8 मलिन	$\frac{26}{30}$	$+\frac{2}{30}$	$\frac{26+2}{30} = \frac{28}{30}$
9 काञ्चन	$\frac{28}{30}$	$+\frac{2}{30}$	$\frac{28+2}{30} = \frac{30}{30} = 1 \frac{0}{30}$ सा.
10 रोहित	$\frac{31}{30}$	$+\frac{2}{30}$	$\frac{31+2}{30} = \frac{33}{30} = 1 \frac{3}{30} = 1 \frac{1}{10}$ सा.
11 चञ्चल	$\frac{33}{30}$	$+\frac{2}{30}$	$\frac{33+2}{30} = \frac{35}{30} = 1 \frac{5}{6}$ सा.
12 मरुत	$\frac{34}{30}$	$+\frac{2}{30}$	$\frac{34+2}{30} = \frac{36}{30} = 1 \frac{6}{30}$ सा.
13 ऋषीश	$\frac{36}{30}$	$+\frac{2}{30}$	$\frac{36+2}{30} = \frac{38}{30} = 1 \frac{19}{15} = 1 \frac{3}{5}$ सा.
14 वैश्या	$\frac{38}{30}$	$+\frac{2}{30}$	$\frac{38+2}{30} = \frac{40}{30} = 1 \frac{40}{30}$ सा.
15 शचक	$\frac{41}{30}$	$+\frac{2}{30}$	$\frac{41+2}{30} = \frac{43}{30} = 1 \frac{13}{30}$ सा.
16 रुधिर	$\frac{43}{30}$	$+\frac{2}{30}$	$\frac{43+2}{30} = \frac{45}{30} = 1 \frac{15}{30} = 1 \frac{1}{2}$ सा.
17 अङ्क	$\frac{44}{30}$	$+\frac{2}{30}$	$\frac{44+2}{30} = \frac{46}{30} = 1 \frac{23}{15}$ सा.
18 स्फटिक	$\frac{46}{30}$	$+\frac{2}{30}$	$\frac{46+2}{30} = \frac{48}{30} = 1 \frac{24}{30}$ सा.
19 सपनीय	$\frac{48}{30}$	$+\frac{2}{30}$	$\frac{48+2}{30} = \frac{50}{30} = 1 \frac{16}{9}$ सा. = $1 \frac{16}{9}$ सा.
20 मेघ	$\frac{49}{30}$	$+\frac{2}{30}$	$\frac{49+2}{30} = \frac{51}{30} = 1 \frac{17}{10}$ सा.



पटल संख्या व नाम	पूर्व पटल आयु	वृद्धिप्रमाण	लब्धि = उत्तर पटल की उत्कृष्ट आयु
21 अश्रु	$43 \div 30$	$+2 \div 30$	$= 44 \div 30 = \frac{44}{30} = 1 \frac{14}{30}$ सा.
22 हवित	$\frac{44}{30}$ सा.	$+\frac{2}{30}$ सा.	$\frac{44+2}{30} = \frac{46}{30} = \frac{23}{15} = 1 \frac{8}{15}$ सा.
23 पद्म	$\frac{46}{30}$ सा.	$+\frac{2}{30}$ "	$= \frac{46+2}{30} = \frac{48}{30} = 1 \frac{28}{30}$ सा.
24 लोहित	$\frac{48}{30}$ सा.	$+\frac{2}{30}$ "	$\frac{48+2}{30} = \frac{50}{30} = 1 \frac{20}{30}$ सा.
25 वज्र	$\frac{50}{30}$ सा.	$+\frac{2}{30}$ "	$\frac{50+2}{30} = \frac{52}{30} = 1 \frac{22}{30}$ सा.
26 नव्यावर्त	$\frac{52}{30}$ सा.	$+\frac{2}{30}$ "	$\frac{52+2}{30} = \frac{54}{30} = 1 \frac{24}{30}$ सा.
27 प्रमद्वर	$\frac{54}{30}$ सा.	$+\frac{2}{30}$ "	$\frac{54+2}{30} = \frac{56}{30} = 1 \frac{26}{30}$ सा.
28 पृष्ठक	$\frac{56}{30}$ सा.	$+\frac{2}{30}$ "	$\frac{56+2}{30} = \frac{58}{30} = 1 \frac{28}{30}$ सा.
29 गन	$\frac{58}{30}$ सा.	$+\frac{2}{30}$ "	$\frac{58+2}{30} = \frac{60}{30} = 2$ सा.
30 मित्र	$\frac{60}{30}$ सा.	$+\frac{2}{30}$ "	$\frac{60+2}{30} = \frac{62}{30} = 2 \frac{1}{15}$ सा.
31 प्रभ	$\frac{62}{30}$ सा.	$+\frac{2}{30}$ "	$\frac{62+2}{30} = \frac{64}{30} = 2 \frac{2}{15}$ सा.
सामलकुमार मोहन			
1 अंजम	$\frac{4}{2}$ सा.	$+\frac{4}{6}$ सा.	$= \frac{4 \times 6}{2 \times 6} + \frac{4 \times 2}{6 \times 2} = \frac{24+8}{12} = \frac{32}{12} = 2 \frac{8}{12}$ सा.
2 वनमाल	$\frac{8}{6}$ सा.	$+\frac{4}{6}$ सा.	$\frac{8+4}{6} = \frac{12}{6} = 2$ सा.
3 नाग	$\frac{12}{6}$ सा.	$+\frac{4}{6}$ सा.	$\frac{12+4}{6} = \frac{16}{6} = 2 \frac{4}{6}$ सा.
4 गरुड	$\frac{16}{6}$ सा.	$+\frac{4}{6}$ सा.	$\frac{16+4}{6} = \frac{20}{6} = 3 \frac{2}{6}$ सा.
5 लाङ्गल	$\frac{20}{6}$ सा.	$+\frac{4}{6}$ सा.	$\frac{20+4}{6} = \frac{24}{6} = 4$ सा.
6 बलभद्र	$\frac{24}{6}$ सा.	$+\frac{4}{6}$ सा.	$\frac{24+4}{6} = \frac{28}{6} = 4 \frac{4}{6}$ सा.
7 चक्र	$\frac{28}{6}$ सा.	$+\frac{4}{6}$ सा.	$\frac{28+4}{6} = \frac{32}{6} = 5 \frac{2}{6}$ सा.

पटल संख्या व नाम	पूर्व पटल उ.आयु	वृद्धिप्रमाण	लब्ध = उत्तर पटल की उक्तृष्ट आयु
ब्रह्म प्रलोत्तर स्वर्ग 1 अरिष्ट पटल	$\frac{94}{2}$ सा.	$+\frac{3}{4}$ सा.	$\frac{94 \times 2}{2 \times 2} + \frac{3}{4} = \frac{30+3}{4} = \frac{33}{4} = 8\frac{1}{4}$ सा.
2 सुरस "	$\frac{33}{4}$ सा.	$+\frac{3}{4}$ सा.	$\frac{33+3}{4} = \frac{36}{4} = 9$ सा.
3 ब्रह्म "	$\frac{36}{4}$ सा.	$+\frac{3}{4}$ सा.	$\frac{36+3}{4} = \frac{39}{4} = 9\frac{3}{4}$ सा.
4 ब्रह्मोत्तर "	$\frac{39}{4}$ सा.	$+\frac{3}{4}$ सा.	$\frac{39+3}{4} = \frac{42}{4} = 10\frac{2}{4} = 10\frac{1}{2}$ सा.
लान्ताव अपिष्ट स्वर्ग 1 ब्रह्महृदय	$\frac{29}{2}$ सा.	+2 सा.	$\frac{29}{2} + \frac{2 \times 2}{2} = \frac{29+4}{2} = \frac{33}{2} = 16\frac{1}{2}$ सा.
2 लान्ताव	$\frac{24}{2}$ सा.	+2 सा.	$\frac{24}{2} + \frac{2 \times 2}{2} = \frac{24+4}{2} = \frac{28}{2} = 14$ सा.
शुक्र महाशुक्र स्वर्ग 1 शुक्र पटल शतार सतार	$18\frac{1}{2}$ सा.	+2 सा.	= $16\frac{1}{2}$ सा.
1 शतार पटल	$16\frac{1}{2}$ सा.	+2 सा.	= $14\frac{1}{2}$ सा.
अन्नत प्राणत स्वर्ग 1 आनत पटल	$14\frac{1}{2}$ सा.	$+\frac{1}{2}$ सा.	= 15 सा.
2 प्राणत "	15 सा.	$+\frac{1}{2}$ सा.	= $15\frac{1}{2}$ सा.
3 पुष्पक "	$15\frac{1}{2}$ सा.	$+\frac{1}{2}$ सा.	= 16 सा.
आरण अच्युत स्वर्ग 1 सातक पटल	20 सा.	$+\frac{2}{3}$ सा.	= $20\frac{2}{3}$ सा.
2 आरण "	$20\frac{2}{3}$	$+\frac{2}{3}$ सा.	= $20\frac{4}{3} = 20\frac{1}{3}$ सा.
3 अच्युत पटल	$20\frac{1}{3}$	$+\frac{2}{3}$ सा.	= $20\frac{3}{3} = 21$ सा.

एक जीवकी अपेक्षा कालप्ररूपणा

पृ. 995-996

navneet.com

Page No.:

Date: / /

मार्गणा का नाम

जघन्य काल

उत्कृष्ट काल

1) नरक गति	१०,००० वर्ष	३३ सागरोपम
प्रथम पृथिवी	"	१ "
द्वितीय "	१ सा. + १ समय	३ "
तृतीय "	३ सा. + "	७ "
चौथी "	७ सा. + "	१० "
पांचवी "	१० सा. + "	१७ "
छठी "	१७ सा. + "	२२ "
सातवी "	२२ सा. + "	३३ "
2) तिर्य्यगति	क्षुद्रभवग्रहण	अनन्त (आवली पुद्गल परिवर्तन)
पंचेन्द्रिय तिर्य्य	"	१५ पूर्वकोटी + तीन पत्य
" पर्याप्त तिर्य्य	अंतर्मुहूर्त	४७ " "
त्रोनिनी "	"	१५ " "
पंचेन्द्रिय तिर्य्य अपर्याप्त	क्षुद्रभवग्रहण	अन्तर्मुहूर्त
3) मनुष्य गति	"	४७ पूर्वकोटी + तीन पत्य
मनुष्य पर्याप्त	अंतर्मुहूर्त	२३ पूर्वकोटी + " "
मनुष्यनी	"	७ " + " "
अपर्याप्त मनुष्य	क्षुद्रभवग्रहण	अंतर्मुहूर्त
4) देव गति	१०००० वर्ष	३३ सागर
भवनवासी आदि देवोंका पीछे देखना.		

इन्द्रियमार्गणा एकेन्द्रिय

क्षुद्रभवग्रहण

आवली पुद्गल परिवर्तन प्रमाण अनन्त असंख्यात

बादर "

"

अंगुलः असंख्यात अवसर्पिणी उत्स.

बादर " पर्याप्त

अंतर्मुहूर्त

संख्यात हजार

" " अपर्याप्त

क्षुद्रभव.

अंतर्मुहूर्त

सूक्ष्म "

"

असंख्यात लोकप्रमाण

" " पर्याप्त

अंतर्मुहूर्त

अंतर्मुहूर्त

" " अपर्याप्त

क्षुद्रभव

"

द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय

"

संख्यात हजार

पर्याप्त " " "

अंतर्मुहूर्त

"

अपर्याप्त " " "

क्षुद्रभव

अंतर्मुहूर्त

मार्गशाका नाम	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
सा. पंचेद्रिय	क्षुद्रभव	पूर्वकोटि पृथक्त्व + सागरोपम संख्या
पर्याप्त पंचेद्रिय	अंतर्मुहूर्त	सागरोपम अंतर्मुहूर्त
अपर्याप्त " "	क्षुद्रभव	
कायमागिणी		
पृथ्वी, अप, तेज, वायुकायिक	"	असंख्यात लोकप्रमाण
बा. " " " "	"	७० कोडाकोडी सागरोपम (कर्मस्थिति)
बादर " " " "	अंतर्मुहूर्त	संख्यात हजार वर्ष
वनस्पतिकायिक पर्याप्त		
बा. अपर्याप्त पृथ्वी, अप, तेज	क्षुद्रभव	अंतर्मुहूर्त
वायु, वनस्पतिकायिक		
सूक्ष्म पृथ्वी, अप, तेज, वायु, वनस्प	क्षुद्रभव	असंख्यात लोकप्रमाण
तिकायिक, सूक्ष्म निगोद जीव		
सूक्ष्म पर्याप्त उपर्युक्त सभी	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त
" अपर्याप्त " "	क्षुद्रभव	"
वनस्पतिकायिक	"	असंख्यात पुद्गलपरावर्तन
निगोद जीव	"	अदाई "
बादर "	"	कर्मस्थितिप्रमाण
प्रसकायिक	"	पूर्वकोटीपृथक्त्व + 2000 सागर
प्रसकायिक पर्याप्त	अंतर्मुहूर्त	2000 सागर
" अपर्याप्त	क्षुद्रभव	अंतर्मुहूर्त
योगमागिणी		
पाच मनोयोगी, पाच क्पनयोगी	१ समय	अंतर्मुहूर्त
काययोगी	अंतर्मुहूर्त	आवली: असंख्यात मात्र पुद्गलपरावर्तन
औदारिक काययोगी	१ समय	22 हजार वर्ष
औदारिके मिश्र, वैद्वियिक, आहारक	१ समय	अंतर्मुहूर्त
वैद्वियिक मिश्र, आहारक मिश्र	अंतर्मुहूर्त	"
कर्मठा काययोगी	१ समय	3 समय
वेदमागिणी		
स्त्रीवेदी	१ समय	पल्योपमशत पृथक्त्व
पुरुषवेदी	अंतर्मुहूर्त	सौ सागरोपम पृथक्त्व
नपुंसकवेदी	१ समय	अनन्तकाल = आवली पुद्गलपरिवर्तन असंख्यात

भार्गवाका नाम

जघन्य काल

उत्कृष्ट काल

अपगतवेदी

१ समय

उपशम्रेणी
अंतर्मुहूर्तक्षपक श्रेणी
पूर्वकोटी - (८ वर्ष + अंतर्मुहूर्त)

कषायभार्गवा

क्रोध, मान, माया, लोभ

१ समय

॥

अकषायी

१ ॥

पूर्वकोटी वर्ष - (८ वर्ष + अंतर्मुहूर्त)

ज्ञानभार्गवा

मति अज्ञानी, श्रुताज्ञानी

अंतर्मुहूर्त

कुछ कम अर्ध पुद्गल परावर्तन

विभंगज्ञानी

१ समय

॥ ॥ ३३ सागरोपम

मति, श्रुत, उवाचि ज्ञानी

अंतर्मुहूर्त

६६ सागरोपम + ४ पूर्वकोटी

मनःपर्ययज्ञानी

॥

कुछ कम पूर्वकोटी

केवलज्ञानी

॥

॥

संयमभार्गवा

संयत, परिवारविशुद्धि

॥

॥

संयतासंयत

॥

॥

सामायिक, छेदोपस्थापना

१ समय

॥

उपशामक सूक्ष्मसांपरीयिक संयत

१ समय

अंतर्मुहूर्त

क्षपक

॥

अंतर्मुहूर्त

॥

उपशामक यथाख्यात विहार शुद्धि

१ समय

॥

क्षपक

॥

अंतर्मुहूर्त

कुछ कम पूर्वकोटी

असंयत (सारि-सान्त)

॥

कुछ कम अर्धपुद्गल परावर्तन

दर्शनिभार्गवा

चक्षुदर्शनी

अंतर्मुहूर्त

2000 सागरोपम

अचक्षुदर्शनी →

अनादि-अमन्त

अथवा अनादि सान्त

अवाधि दर्शनी

अंतर्मुहूर्त

६६ सागरोपम + ४ पूर्वकोटी

केवल दर्शनि

॥

कुछ कम पूर्वकोटी ८ वर्ष अंतर्मुहूर्त कम

लेख्या भार्गवा

कृष्णलेख्या

अंतर्मुहूर्त

३३ सागरोपम + २ अंतर्मुहूर्त

नील ॥

॥

१७ ॥

कापोत ॥

॥

७ ॥

तेज (पीत)

॥

२ १/२ ॥

पद्म लेख्या

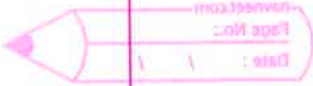
॥

१८ १/२ ॥

शुक्ल ॥

॥

३३ सागरोपम + ७



मार्गिका का नाम	जघन्यकाल	उत्कृष्ट काल
भ्रूव्य मार्गिका भव्यसिद्धिक अभव्य "	अनादि अनन्त " "	अथवा अनादि सात्
सम्यक्त्व मार्गिका सम्यक्त्व क्षायिक सम्भव	अंतर्मुहूर्त "	६६ सागरोपम + ६ पूर्वकोटी ३३ सागरोपम + ६ पूर्वकोटी - ८ वर्ष + दो अन्तर्मुहूर्त
वेदक "	"	६६ सागरोपम
ओपशमिक ॥, मिश्र	"	अंतर्मुहूर्त
सासादन	१ समय	६ आवली
मिथ्यात्व (सादि सांत)	अंतर्मुहूर्त	कुछ कम अर्धपुद्गल परावर्तन
संज्ञी मार्गिका संज्ञी असंज्ञी	क्षुद्रभव "	सौ सागरोपम पृथक्त्व अनन्तकाल (आवली पुद्गलपरावर्तन) असंख्यात
आहार मार्गिका आहारक अनाहारक	क्षुद्रभव-३ समय १ समय	असंख्याता संख्यात उत्स. अवसर्पिणी ३ समय, अयोगी केवली अपेक्षा अंतर्मुहूर्त

पृ. १८६-२३६

एक जीवकी अपेक्षा अंतरप्ररूपणा

मार्गिका का नाम	जघन्य अन्तर	उत्कृष्ट अन्तर
नारकी	अन्तर्मुहूर्त	अनन्तकाल (असंख्यात पुद्गलपरावर्तन)
सातो पृथिवी नारकी	"	"
तिर्यंच	क्षुद्रभव	सागरोपम शतपृथक्त्व
" पंचेन्द्रिय	"	असंख्यात पुद्गलपरावर्तन ^{२५} अनन्तकाल
पर्याप्त " तिर्यंच	"	"
योनिनी " तिर्यंच	"	"
मनुष्य	"	"
" " पर्याप्त	"	"
मनुष्यनी	"	"
मनुष्य अपर्याप्त	"	"

मार्गणा का नाम

अधन्य अन्तर

उत्कृष्ट अन्तर

देवगति

अंतर्मुहूर्त

अनन्तकाल (आवलि असंख्यात पुद्गलपरावर्तन मात्र)

भवमवासी, दानव्यन्तर, ज्योतिषी

"

"

"

शौधर्म ऐशान

"

"

"

शानकुमार महेंद्र

मुहूर्त पृथक्त्व

"

"

ब्रह्मब्रह्मन्तर, लान्तव कपिष्ठ

द्विस "

"

"

शुक्र, महाशुक्र, शतार सहस्रार

पक्ष "

"

"

आनत, प्राणत, आरण, अच्युत

मास "

"

"

नौ ग्रैवेयिक

वर्षपृथक्त्व

"

"

अनुदिश, अपराजिततक

"

दो सागरोपम + 1/2 सागर + पूर्वकोटी

इन्द्रिय मार्गणा

एकेन्द्रिय

क्षुद्रभव

पूर्वकोटी पृथक्त्व + 2 हजार सागर

बादर "

"

बहुत असंख्यात लोकप्रमाण

" " पर्याप्त

"

" " "

" " अपर्याप्त

"

" " "

सूक्ष्म "

"

असंख्यात उत्सर्पिणी अवसर्पिणी (अंगुल असंख्यात)

" " पर्याप्त

"

"

" " अपर्याप्त

"

"

पर्याप्त, अपर्याप्त द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय

"

अनन्तकाल = असंख्यात पुद्गलपरावर्तन

" " चतुरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय

"

"

कायमार्गणा

बादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त

"

"

"

पृथ्वी, अप, तेज, वायु

बादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त

"

असंख्यात लोकप्रमाण

वनस्थिति कायिक निगोद

बादर, वनस्थिति प्रत्येक शरीर

"

अटार्ई पुद्गलपरावर्तन

पर्याप्त, अपर्याप्त

प्रसकायिक, पर्याप्त, अपर्याप्त

"

असंख्यात पुद्गलपरावर्तन = अनन्तकाल

मार्गणा का नाम

अधन्य अंतर

उत्कृष्ट अंतर

योग मार्गणा

पाचो मनोयोगी, ५ वचनयोगी
काययोगी

औदारिक, काययोगी

औहारिक मिश्र "

वैक्रियिक काययोग

वैक्रियिक मिश्र "

आहारक, आहारक मिश्र "

कार्मणकाययोग

अंतर्मुहूर्त

१ समय

"

"

"

कुछ अधिक १००००२ वर्ष

अंतर्मुहूर्त

क्षुद्रभव-३ समय

आवली = असंख्यात
अनन्तकाल = असंख्यात पुद्गलपरावर्तन
अंतर्मुहूर्त

३३ सागर + ९ अंतर्मुहूर्त + २ समय

३३ सागर + (पूर्वकोटी - अंतर्मुहूर्त)

अनन्तकाल = आवली पुद्गलपरावर्तन
असंख्यात

" "

कुछ कम अर्ध पुद्गलपरावर्तन

असंख्यातासंख्यात उत्स. अवसर्पिणी = अंगुल
असंख्यात

वेद मार्गणा

स्त्रीवेदी

पुरुषवेदी

नपुंसकवेदी

अपगणवेदी उपशामक

क्षुद्रभव

१ समय

अंतर्मुहूर्त

"

असंख्यात पुद्गलपरावर्तन = अनन्तकाल

" " "

सागरोपमशत पृथक्त्व

कुछ कम अर्धपुद्गल परावर्तन

कषाय मार्गणा, ४ कषाय

अकषाय उपशामक

१ समय

अंतर्मुहूर्त

अंतर्मुहूर्त

कुछ कम अर्धपुद्गल "

ज्ञान मार्गणा

प्रतिअज्ञानी, प्रतु अज्ञानी

विभंगज्ञानी

मति, प्रतु, अवधि, मनःपर्ययज्ञानी

केवलज्ञानी

"

"

"

अंतर नहीं

कुछ कम

१३२ सागरोपम अक्षर

अनन्तकाल = असंख्यात पुद्गल परावर्तन

कुछ कम अर्धपुद्गलपरावर्तन

संयम मार्गणा

संयत, सामा, छेदो. परिहारशु. संयत

संयतासंयत

सूक्ष्म सांपराय, यथा स्यात्

असंयत

अंतर्मुहूर्त

"

"

"

कुछ कम अर्ध पुद्गल परावर्तन

"

"

पूर्वकोटी - (८ वर्ष + अंतर्मुहूर्त)

मार्गों का नाम

जघन्य अंतर

उत्कृष्ट अंतर

दक्षिण मार्गों

यक्षुदर्शन

अयक्षुदर्शन

अवधि दर्शन

केवल दर्शन

क्षुद्रभव

अंतर नहीं

अंतर्मुहूर्त

अंतर नहीं

अनन्तकाल = असं. पुद्गल परावर्तन

अंतर नहीं

कुछ कम पुद्गल परावर्तन

अंतर नहीं।

लेश्यामार्गों

कृष्णलेश्या

नीललेश्या

कापोतलेश्या

तेजो लेश्या, पद्म, शुक्ल

अंतर्मुहूर्त

»

»

»

(उत्सागर + पूर्वकोटी) - (आठ वर्ष + 90 अंतर्मुहूर्त)

»

»

»

»

अनन्तकाल = असंख्यात पुद्गल परावर्तन

भव्यमार्गों

भव्यसिद्धि, अभव्यसिद्धि

अंतर नहीं

अंतर नहीं

साम्यक्त्वमार्गों

उपशम साम्यक्त्व, वेदक साम्यक्त्व

साम्यग्भेद्यग्रहृष्टि

क्षायिक साम्यग्रहृष्टि

सासादन »

अंतर्मुहूर्त

»

पत्न्योपम = असंख्यात

कुछ कम

अर्ध पुद्गल परावर्तन

» » »

कुछ कम अर्ध पुद्गल परावर्तन

संज्ञीमार्गों

संज्ञी

असंज्ञी

क्षुद्रभव

»

अनन्तकाल = असंख्यात पुद्गल परावर्तन

सागरोपम शत पृथक्त्व

आहारमार्गों

आहारक

अनाहारक

9 समय

क्षुद्रभव - 3 समय

3 समय

असंख्यातासंख्यात उत्सर्पिणी अवसर्पिणी

गति का नाम	द्रव्यप्रमाणसे	कालप्रमाणसे	क्षेत्रप्रमाणसे संख्या
1 सामान्य नारकी	असंख्यात	असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणी उत्सर्पिणी	जगत्प्रतर = असंख्यात जगत्क्षेत्री असंख्यात सूच्यंगुल प्र. वर्गमूल \times द्वि. वर्गमूल
2 प्रथम पृथिवी	"	"	"
3 द्वितीय पृथिवी	"	"	जगत्क्षेत्री \div उसीका 12 वा वर्गमूल
4 तृतीय "	"	"	जगत्क्षेत्री \div 90 वा वर्गमूल
5 चतुर्थ "	"	"	जगत्क्षेत्री \div ८ वा वर्गमूल
6 पांचवी पृथिवी	"	"	जगत्क्षेत्री \div ६ वा वर्गमूल
7 छठी पृथिवी	"	"	जगत्क्षेत्री \div 3 वा वर्गमूल
8 सातवी पृथिवी	"	"	जगत्क्षेत्री \div 2 वा वर्गमूल
9 तिर्य्य	अनन्त	अतीत अनन्तानन्त अवसर्पिणी उत्सर्पिणीसे आधिक	अनन्तानन्त लोकप्रमाण
10 पंचेन्द्रिये तिर्य्य	असंख्यात	असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणी उत्सर्पिणी	जगत्प्रतर \div देव अवलोककाल आवली का असंख्यातवा भाग
11 पंचेन्द्रिय तिर्य्य पर्याप्त	"	"	जगत्प्रतर \div देव अवलोककाल संख्यात
12 पंचेन्द्रिय तिर्य्य योनिनी	"	"	जगत्प्रतर \div देव अव. \times संख्यात
13 पंचेन्द्रिय तिर्य्य अपर्याप्त	"	"	जगत्प्रतर \div देव अवलोककाल आवली असंख्यातवा भाग
14 मनुष्य	"	"	(जगत्क्षेत्री \div सूच्यंगुल \times वर्गमूल) - 1
15 मनुष्य अपर्याप्त	"	"	"
16 मनुष्य पर्याप्त	छठे और सातवे वर्गके बीचकी संख्या	692219E24942E433649354 394033E	
17 मनुष्यनी	मनुष्य पर्याप्त रक्षी \times 3	8	

किसी भी वर्गमूल संख्याको ^{उसके} जितनेवे वर्गमूलसे भाग देनेपर जो लब्ध आता है उतना ही प्रमाण वह उस संख्याके प्रथम वर्गमूल से उस वर्गमूल तक के वर्गमूलोंको परस्पर गुणा करनेसे भी आता है।
जैसे ६५५३६ का तीसरा वर्गमूल ४ है

$$\frac{65536}{4} = 16384 \text{ यही लब्ध प्रथम तीन वर्गमूलोंका परस्पर गुणा करनेसे भी प्राप्त होता है।}$$

$$\begin{matrix} \text{प्र.मू.} & \text{द्वि.मू.} & \text{तृ.मू.} \\ 256 \times 96 \times 4 & & = 98304 \end{matrix}$$

इसलिए यथापर ^{द्वितीयांश} नारकियोंकी संख्या दो प्रकारसे कही है जगत्प्रेणीके प्रथम वर्गमूलसे बारहवे ^{वर्गमूलतकके बारह} वर्गमूलोंका परस्पर गुणा करनेपर द्वितीय पृष्ठीके नारकियोंकी संख्या आती है अथवा जगत्प्रेणीको ^{उसीके} बारहवे वर्गमूलसे भाग देनेपर भी वह संख्या आती है। इसी प्रकार शेष नारकियोंकी संख्या समझना।

पृ. 244

मनुष्योंकी संख्या = $\left(\frac{\text{जगत्प्रेणी}}{\text{सूर्य्यंगुल प्रथम वर्गमूल} \times \text{तृतीय वर्गमूल}} \right) - 9 = \text{मनुष्य}$

$\begin{array}{r} \text{बालाकारशि} = \text{सूर्य्य. प्र. मू.} \times \text{तृ. मू.} \\ - 9 \\ \hline \text{शेष} \\ - 9 \\ \hline \end{array}$	$\begin{array}{r} \text{जगत्प्रेणी} \\ - \text{मनुष्य} + 9 \\ \hline \text{शेष} \\ - \text{मनुष्य} + 9 \\ \hline \text{शेष} \end{array}$
---	--

इसप्रकार एक अधिक मनुष्यराशि को जगत्प्रेणीमें से कम करनेपर बालाकारशिमें से कम करना इसप्रकार करनेसे बालाकारशि और जगत्प्रेणी एकसाथ समाप्त होती है।
कृतयुग्म राशि → जिस संख्याके चार का भाग देनेपर कुछ भी शेष नहीं रहता अथवा चार शेष रहते है उसे ^{संख्याका} कृतयुग्म राशि कहते है। जगत्प्रेणी कृतयुग्म राशि है।
तेजोज राशि → जिस संख्यामें चार का भाग देनेपर तीन शेष रहते है उसे तेजोज राशि कहते है। जगत्प्रेणीमें सूर्य्यंगुल के प्रथम और तृतीय वर्गमूलका गुणा करके भाग देनेपर कृतयुग्म राशि आती है इसलिए उसमें से एक कम कर देनेपर तेजोजरूप मनुष्यराशि आती है। इसलिए अपहृत कथन करते समय जगत्प्रेणी में से एक अधिक मनुष्यराशि घटानी चाहिए क्योंकि केवल मनुष्य राशि का ही प्रमाण घटायेगे तो बालाकारशि समाप्त होनेपर जगत्प्रेणी समाप्त नहीं होगी उसमें ^{जितना प्रमाण है उतनी} संख्या शेष रहेगी इसलिए मनुष्यराशि में एक अधिक करके जगत्प्रेणी में घटाने है।

अध्याहार

जैसे जगत्प्रमाण ३६, अवलोकन ४, अनुप्यराशि = २३

2e

शलाका	४	जगत्प्रमाण ३६	शलाका ४	५०	३६	४८
	-१	-२३	-१	-२३	+२४	+२४
	-३	२३	-१	२६	५२	२४
	२	५०	०	-२३	+२४	+२४
				२	४८	०

navneet.com
Page No.:
Date: १२/६-२०१८

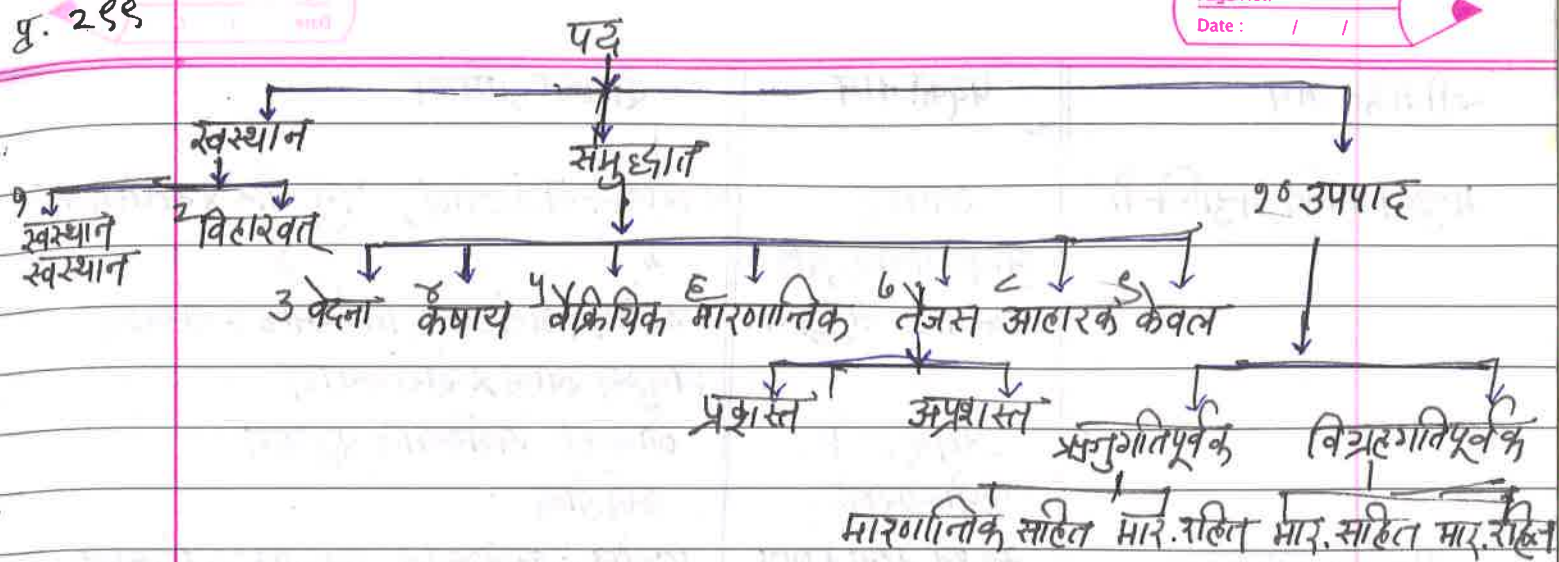
जीवोंका नाम	द्रव्यप्रमाणसे	कालप्रमाणसे	क्षेत्रप्रमाणसे
एकेन्द्रिय, एके पर्याप्त एके अपर्याप्त, बा. एके बा. एके पर्याप्त, बा. एके अप सू. एके, सू. एके. प. सू. एके. अ	अनन्त	अनन्तानन्त अवसर्पिणी उत्सर्पिणी से भी अधिक	अनन्तानन्त लोकप्रमाण
द्वीन्द्रिय, अप. त्रीन्द्रिय, अप. चतुन्द्रिय, अप. पंचे, अप.	असंख्यात	असंख्यातासंख्यात अव. सर्पिणी उत्सर्पिणी	जगत्प्रतर ÷ $\frac{\text{प्रतरांगुल}}{\text{असंख्यात}}$
द्वी.प त्री.प, च.प. पंचे, पर्याप्त	"	"	"
पृ., जल, तेज, वायु बा.पृ, बा.ज, बा.ते, बा.वायु, बा. वन. प्र. इनके अपर्याप्त सू.पृ, सू.ज, सू.ते, सू.वा. प.प्र.	"	"	जगत्प्रतर ÷ $\frac{\text{प्रतरांगुल}}{\text{संख्यात}}$ असंख्यात लोकप्रमाण
बा.पृ.प, बा.ज.प, बा.वन.प. पर्याप्त	असंख्यात	"	जगत्प्रतर ÷ $\frac{\text{प्रतरांगुल}}{\text{पल्यापमका असंख्यातवा भाग}}$
बा. तेज पर्याप्त	"	असंख्यात आवली, धनावलीके भीतर	असंख्यात जगत्प्रतर अथवा लोकका संख्यातवा भाग
बा. वायु पर्याप्त	"	असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणी, उत्सर्पिणी	अनन्तानन्त लोकप्रमाण
वनस्पति दोड़दर शेष सर्व वनस्पति और, सर्व निगोद	अनन्त	अनन्तानन्त अवसर्पिणी उत्सर्पिणी से अधिक	
प्रसकायिक, त्रस अपर्याप्त	असंख्यात	असंख्यातासंख्यात अव. उत्स.	जगत्प्रतर ÷ $\frac{\text{प्रतरांगुल}}{\text{आवली का असंख्यातवा भाग}}$
त्रस पर्याप्त	"	"	जगत्प्रतर ÷ $\frac{\text{प्रतरांगुल}}{\text{संख्यात}}$

जीवोंका नाम	संख्या प्रमाण
मतिअज्ञानी, श्रुतअज्ञानी विभंगज्ञानी मतिज्ञानी, श्रुतज्ञानी अवधिज्ञानी मनःपर्ययज्ञानी केवलज्ञानी	अनन्तानन्त लोकप्रमाण देवोंसे कुछ अधिक पत्न्योपम ÷ अंतमुद्दत संख्यात अनन्त
साम्प्रायिक, छेदो. संयत परिलक्ष्यशुद्धि संयत सूक्ष्मसांपराय संयत यथारख्यात बिलर शुद्धि संयत संयतासंयत असंयत	कोटिपृथक्त्व सहस्रपृथक्त्व शतपृथक्त्व शतसहस्रपृथक्त्व (लक्षपृथक्त्व) पत्न्योपम ÷ असंख्यात अवली अनन्तानन्त
चक्षुदर्शनी	असंख्यात (जगत्प्रतर ÷ प्रतरांगुल संख्यात)
अचक्षुदर्शनी अवधिदर्शनी केवलदर्शनी	अनन्तानन्ते लोकप्रमाण पत्न्योपम ÷ अंतमुद्दत अनन्त
कृष्ण, नील, कापोत लेश्यावाले तेजो लेश्यावाले पद्म लेश्यावाले शुक्ल लेश्यावाले	अनन्तानन्त ज्योतिषी देव + भवनवासी, वागव्यंतर, तेजो लेश्यावाले तिर्य्य मनुष्य जगत्प्रतर ÷ संख्यात प्रतरांगुल पत्न्योपम ÷ असंख्यात
भव्यसिद्धिक अभव्यसिद्धिक सभी प्रकारके साम्यदृष्टि, सासा, मिश्र मिथ्यादृष्टि संज्ञी असंज्ञी आहारक, अनाहारक	अनन्तानन्त लोकप्रमाण अध्वन्य युक्तानन्त पत्न्योपम ÷ असंख्यात अनन्तानन्त लोकप्रमाण देवोंसे अधिक अनन्तानन्त लोकप्रमाण अनन्तानन्त "

क्षेत्रानुगम

पृ. 2९९

navneet.com
Page No.:
Date: / /



नरकगति, तिर्य्यगगति व देवगतिमें ७ पद होते हैं।
 १) स्व.स्वस्थान २) विलारवत् स्वस्थान ३) वेदना ४) कषाय ५) वैक्रियिक ६) मारणान्तिक ७) उपपाद। क्योंकि तेजस, आहारक समुद्घात मृद्धिधारी मृत्तियोंके ही होता है।
 मनुष्यगतिमें उपर्युक्त १० पद होते हैं।

पांचे लोक = सामान्यलोक, दुर्ध्वलोक, अधोलोक, तिर्यग्लोक, मनुष्यलोक
 ३४३ धनराज्य १४७ धनराज्य १९६ धनराज्य १०००००० घो. ४५ लाख योजन चौड़ा
 जंगलप्रतर १ लाख योजन ऊंचा

जीवोंका नाम	पदोंका नाम	क्षेत्रका प्रमाण
नारकी	७ पद	चार लोकोंका असंख्यातवा भाग, मनुष्यलोक X असंख्यात
तिर्य्य	५ पद	सर्वलोक
पंचेन्द्रिय तिर्य्यादि ३ भेदोंमें	विलारवत् स्व.	३ लोक ÷ असंख्यात, तिर्यग्लोक ÷ संख्यात, मनु.लोक X असं.
	वैक्रि. समुद्घात	४ लोक ÷ असंख्यात, मनुष्यलोक X असंख्यात
	प्रथम ५ पद	३ लोक ÷ संख्यात, तिर्यग्लोक ÷ संख्यात, मनु.लोक X असंख्यात
	वैक्रियिक समु.	४ लोक ÷ असंख्यात, मनुष्यलोक X असंख्यात
" "	मारणान्तिक समु	३ लोक ÷ असंख्यात, तिर्यग्लोक, मनुष्यलोक X असंख्यात X असंख्यात
	उपपाद	"
	स्वस्थान वेदना, कषाय समु.	४ लोक ÷ असंख्यात, मनुष्यलोक X असंख्यात
पंचेन्द्रिय अपर्याप्त	मारणान्तिक	३ लोक ÷ असंख्यात, तिर्यग्लोक X असंख्यात,
	उपपाद	मनुष्यलोक X असंख्यात
मनुष्य, मनुष्य पर्याप्त, मनुष्यिनी	स्व.स्व, विलार.स्व	४ लोक ÷ असंख्यात, मनुष्यलोक ÷ संख्यात
	वेदना, कषाय, वैक्रि. तेजस, आहारक	"

एक समयमें

$$\left(\frac{\text{मरनेवाले जीव}}{\text{असंख्यात}} \div \frac{\text{पल्योपम}}{\text{असंख्यात}} \right) \times \frac{\text{पल्योपम}}{\text{असंख्यात}} - 1 = \text{मारणांतिक समुद्धात करनेवाले जीव}$$

उपर्युक्त मारणांतिक समुद्धात राशि \div असंख्यात = ऋजुगतिसे मारणांतिक समुद्धात राशि
 असंख्यात बहुभागप्रमाण = विग्रहगतिसे मारणांतिक समुद्धात राशि

उपर्युक्त विग्रहगतिसे मारणांतिक समुद्धात राशि \times आवलि $\frac{\text{असंख्यात}}{\text{उपक्रमण काल}} =$ मारणांतिक कालमें संचित राशि

मारणांतिक संचित राशि $\times 9 \times$ वाजु \times मुखविस्तार = नारकी मारणांतिक क्षेत्र

उपपाद क्षेत्र \rightarrow

द्वितीय पृथिवी द्रव्य \div $\frac{\text{पल्योपम}}{\text{असंख्यात}} =$ तिर्यचोंसे द्वितीय पृथिवी में उत्पन्न राशि

उपर्युक्त उत्पन्न राशि का असंख्यात बहुभाग = विग्रहगतिसे उत्पन्न होनेवाली राशि
 उपर्युक्त विग्रहगतिसे उत्पन्न राशि \times असंख्यात योजन \times तिर्यचोंकी अवगाहना = नारकी उपपाद क्षेत्र.

सात पृथिवियोंमें सामान्य नारकी के समान क्षेत्र है किंतु सात पृथिवियोंके द्रव्यकी विशेषता, अवगाहनकी विशेषता और मारणांतिक उपपाद क्षेत्रोंके आयामकी विशेषता है।

तिर्यच जीवोंके क्षेत्रप्रमाण का स्पष्टीकरण -

पंचेन्द्रिय तिर्यच, पंचेन्द्रिय पर्याप्त तिर्यच, पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिमती इन तीनोंका मारणांतिक समुद्धातका क्षेत्र = 3 लोक \div असंख्यात

इसका खुलसा -

उपर्युक्त तीनों राशि \div $\frac{\text{आवलि}}{\text{असंख्यात}}$ (उपक्रमणकाल) = एक समयमें मरनेवाले जीवोंका प्रमाण

उपर्युक्त मरण करनेवाली राशि का असंख्यात बहुभाग = $\frac{\text{एक समयमें मरण करनेवाले जीवोंका प्रमाण}}{\text{एक समयमें मरण करनेवाले जीवोंका प्रमाण}} \times$ मारणांतिक समुद्धात राशि

उपक्रमण काल में संचित मारणांतिक राशि = एक समयमें मारणांतिक राशि \times उपक्रमण काल आवलि का असंख्यातवा भाग

$$\frac{\text{उपर्युक्त तीनों राशि} \times \text{असंख्यात} - 9 \times \text{आवलि} \div \text{असंख्यात}}{\text{आवलि} \div \text{असंख्यात} \times \text{असंख्यात}} = \text{उपक्रमण कालमें संचित मारणांतिक राशि}$$

यहांपर भागहारभूत आवलि का असंख्यातवा भाग गुणकारभूत आवलि के असंख्यातवे भागसे संख्यात गुणा है इसलिये अपवर्तन करनेपर अपनी

अपनी राशियोंका संख्यातवा भाग आता है।

$$\frac{\text{उपर्युक्त मारणान्तिक राशि}}{\text{पत्थोपम} \div \text{असंख्यात}} = \frac{\text{असंख्यात योजनों तक मारणान्तिक}}{\text{समुद्धात राशि}}$$

उपर्युक्त दूर मारणान्तिक समुद्धात राशि x राजु x असंख्यात प्रतरांगुल = मारणान्तिक समुद्धातका क्षेत्र

उ लोक ÷ मारणान्तिक समुद्धात क्षेत्र = पत्थोपमका असंख्यातवा भाग इसलिये मारणान्तिक समुद्धातका क्षेत्र तीन लोकोंका असंख्यातवा भाग कहा है। मनुष्यलोक और तिर्यग्लोकसे असंख्यातगुण है।

उपपाद क्षेत्र मारणान्तिक समुद्धातके समान है। विशेषता यह है कि यह राशि एक समयमें संचित है इसलिए आवलीके असंख्यातवे भागसे नही गुणना।

मनुष्योंका उपपाद क्षेत्र ->

$$\frac{\text{मनुष्य अपयक्षि राशि}}{\text{आवली} \div \text{असंख्यात}} = \text{एक समयमें} \frac{\text{उपपाद उत्पन्न राशि}}{\text{अथवा मृत}}$$

एक समय उत्पन्न राशि - मारणान्तिक समुद्धातपूर्वक मृत राशि
पत्थोपम ÷ असंख्यात

$$\frac{\text{उपर्युक्त राशि}}{\text{पत्थोपम} \div \text{असंख्यात}} = \text{द्वितीय दंडमें स्थित उपपाद राशि}$$

एक जीवका उपपाद क्षेत्र = $\frac{\text{प्रतरांगुल}}{\text{पत्थोपम} \div \text{असंख्यात}} \times \frac{\text{जगत्प्रेणी}}{\text{पत्थोपम} \div \text{असंख्यात}}$

जीवकी अवगाहना
अतः योडाई विस्तारसे प्रतरांगुल ÷ असंख्यात और लंबाई एक राजु अथवा जगत्प्रेणी
सम मनुष्य उपपाद क्षेत्र =

$$\frac{\text{मनुष्य अपयक्षि राशि}}{\text{आवली} \div \text{असंख्यात}} \times \frac{\text{प्रतरांगुल}}{\text{असंख्यात}} \times \frac{\text{जगत्प्रेणी}}{\text{असंख्यात}} \times \frac{\text{पत्थोपम} \div \text{असंख्यात}}{\text{पत्थोपम} \div \text{असंख्यात}}$$

पृ. 399-392

मनुष्य अपर्याप्त जीव स्वस्थान, वेदना और कषाय समुद्घात में चार लोकोके असंख्यातवे भागमें तथा मानुषक्षेत्रके संख्यातवे भागमें संचित क्रमसे रहते है अर्थात् एक अवगाहना क्षेत्रमें अनेक जीव रहते है। यदि उन जीवोंको अलग अलग करके पृथक् पृथक् क्षेत्रमें रखेंगे तो मानुषक्षेत्रसे असंख्यात गुणी असंख्यात योजनकोटियां उनका क्षेत्र होता क्यों कि अपर्याप्त मनुष्य असंख्यात है।

मनुष्य अपर्याप्त मारणान्तिके समुद्घात क्षेत्र = 3 लोक ÷ असंख्यात, तिर्यक
मनुष्य अपर्याप्त राशि = जगत्श्रेणी \times मनुष्यलोक \times असंख्यात
सूच्यंगुल प्र. मू \times वृत्त

मनुष्य अपर्याप्त राशि
आवली ÷ असंख्यात = एक समयमें मरनेवाली राशि

एक समय मृत राशि = मारणान्तिक के बिना मरनेवाली राशि
आवली असंख्यात

शेष असंख्यात बहुभागप्रमाण मारणान्तिक समुद्घातगत जीवराशि

मारणान्तिक समुद्घात राशि \times आवली असंख्यात = मारणान्तिक कालके भीतर संचित राशि

जैसे एक समयमें मारणान्तिक राशि 900 मानी मारणान्तिक काल 90 माना
 $900 \times 90 = 9000$ मारणान्तिक कालके भीतर संचित राशि

मारणान्तिक काल संचित राशि = असंख्यात योजन तक मारणान्तिक
पत्न्योपम ÷ असंख्यात समुद्घात करनेवाली राशि

उपर्युक्त मारणान्तिक राशि \times प्रतरांगुल विष्कंभ आयाम मनुष्य अपर्याप्त
पत्न्योपम ÷ असंख्यात \times 7 राजु = मारणान्तिक समुद्घात क्षेत्र

मनुष्य अपर्याप्त उपपाद क्षेत्र \rightarrow मारणान्तिक क्षेत्रके समान

विशेष \rightarrow यह राशि एक समय संचित है अतः आवलीके असंख्यात भागमा
उपक्रमण कालका गुणकार नहीं होगा।

द्वितीय दंडसे जगत्श्रेणीके संख्यातवे भागप्रमाण आयामसे मारणान्तिक
समुद्घात करनेवाले जीवोंका प्रमाण असंख्यातवा भाग है इसलिये

पत्न्योपम के असंख्यातवे भागसे पुनः भाग देना।

393-394

देवोंका मारणान्तिक समुद्धात क्षेत्र →
 तीर्थलोकका असंख्यातवा भाग, तिर्यग्लोक व मनुष्यलोकसे असंख्यातगुणा
 यहां वानव्यन्तरोका क्षेत्र प्रधान है क्योंकि वहां संख्यात वर्षकी आयुवाले देव
 असंख्यात वर्ष आयुवाले देवोंसे असंख्यातगुणे पाये जाते हैं। उनकी अपेक्षा
 निरन्तर उत्पत्तिकाल आवलीका असंख्यातवा भाग है।

वान व्यन्तर राशि × संख्यात (उपक्रमण काल) = मुक्त मारणान्तिक जीवरशि
 आवली ÷ असंख्यात

मारणान्तिक राशि = इषत्प्राग्भारादि उपरिम पृथिवीमें मारणान्तिक करनेवाली
 पत्न्योपम ÷ असंख्यात राशि

उपर्युक्त राशि × $\frac{\text{प्रतरांगुल}}{\text{संख्यात}}$ × संख्यात राजु = देवोंका मारणान्तिक क्षेत्र

देवोंका उपपादक्षेत्र मारणान्तिक समुद्धातके क्षेत्रके समान है।
 विशेष इतना तिर्यच मरणकर देवोंमें उत्पन्न होते हैं उनकी अपेक्षा क्षेत्र
 निकालना।

तिर्यच राशि = एक समयमें मरनेवाली तिर्यच राशि
 तिर्यच उपक्रमण काल

उपर्युक्त मृत राशि = देवों में उत्पन्न होनेवाली राशि
 असंख्यात

देवों में उत्पन्न राशि = राजुप्रमाण जाकर उत्पन्न होनेवाली राशि
 पत्न्योपम ÷ असंख्यात

उपर्युक्त लब्ध राशि = द्वितीय दृष्टसे राजुके संख्यातवे भागमात्र आयामको
 पत्न्योपम ÷ असंख्यात प्राप्त राशि

उपर्युक्त लब्ध राशि × संख्यात प्रतरांगुल × $\frac{\text{जगन्मैत्री}}{\text{संख्यात}}$ = देवोंका उपपाद क्षेत्र

असंख्यात भुगा नदी भवनवासियोंका उपपाद क्षेत्र तिर्यग्लोकका असंख्यातवा भाग ही पाया जाता है। क्योंकि एक विग्रह करके भवनवासियों में उत्पन्न होनेवाले तिर्यच मनुष्योंका उपपादक्षेत्रका आयाम संख्यात योजनमात्र ही है। भवनवासी देव खर

तिर्यग्लोकके अंतमें स्थित होकर नीचे जाकर एक विग्रह करके तिर्यग्रूपसे राजुके संख्यातवे भाग जाकर उत्पन्न होनेवाले जीव बहुत थोड़े हैं।

दो विग्रह करके उत्पन्न होनेवाले जीव असंख्यातवे भागमात्र हैं इसलिए इसलिये भवनवासियोंका उपपादक्षेत्र तिर्यग्लोकके असंख्यातवे भागप्रमाण है

भवनवासियोंका

मारणान्तिक समुद्रघातका क्षेत्र तिर्यग्लोकसे असंख्यातगुणा पाया जाता है,

भवनवासी ईषत्प्राग्भार, पृथ्वीमें एकद्वियोंमें उत्पन्न होते हैं। मारणान्तिक

समुद्रघातके समय प्रथम ^{अर्धराजुमात्र} तिर्यग्लोक जाकर एक विग्रह करके संख्यात राजु ऊपर अपने उत्पत्तिस्थानको स्पर्श करते हैं।

ऊपर ^{भवनवासी} मारणान्तिक ^{समुद्रघात करनेवाला} राशि X अर्धराजु X ७ राजु = मारणान्तिक समुद्रघात का क्षेत्र

सौधर्म ऐशान कल्पवासी देवोंका उपपादक्षेत्र = ३ लोक ÷ असंख्यात

मनुष्य लोक X असंख्यात, तिर्यग्लोक X असंख्यात

सौधर्म ऐशान राशि = एक समयमें उत्पन्न राशि

पत्त्योपम ÷ असंख्यात

- उपर्युक्त उत्पन्न राशि = 439 वे पटल प्रभाप्रस्तारमें उत्पन्न होनेवाले जीवोंका प्रमाण

उपर्युक्त प्रभाप्रस्तार उत्पन्न राशि X प्रतरांगुल X जगत्त्रेणीका संख्यात

प्रभाप्रस्तार मध्यलोकसे उठे राजुप्रमाण है अतः ^{बड़े} जगत्त्रेणीका संख्यातवा भाग आता है।

पृ. 318-320

देवोंका नाम	ऊंचाई	देवोंका नाम	ऊंचाई
असुरकुमार	2५ धनुष	आनत प्राणल	3 1/2 रत्न
शेष कुमार	१० ॥	आरण अच्युत	3 ॥
व्यंतर	१० ॥	अधस्तन त्रैवेयक	2 1/2 ॥
ज्योतिषी	७ ॥	मध्यम त्रैवेयक	2 ॥
सौधर्म व ईशान	७ रत्न	उपरिम त्रैवेयक	१ 1/2 ॥
सानलकुमार मालेन्द्र	६ रत्न	अनुत्तर विमानवासी	१ ॥
प्रस लालव	५ ॥		
शुक सहस्रार	४ रत्न		

अल्पबहुत्वानुगम

पृ. 429

navneet.com
Page No.:
Date: / /

गतिमार्गवाका अल्पबहुत्व

जीवोंका नाम	गुणकार	गुणकार का प्रमाण
मनुष्य नारकी देव	सबसे अल्प असंख्यातगुणे असंख्यातगुणे	मनुष्य अवहारकाल x नारक विष्कंभसूची जगत्प्रेणी पण्ड्री प्रतरांगुल x सूच्यंगुल प्र.मू x द्वि.मू
सिद्ध तिर्यंच	अनन्तगुणे अनन्तगुणे	सिद्ध ÷ देवराशि जीवराशिके वर्गमूल से अनन्तगुण, अथवा भव्यसिद्धिकोंका अनन्तवा भागप्रमाण

मनुष्योंसे नारकी असंख्यातगुणे है। कितने असंख्यातगुणे है इसका प्रमाण निकालने के लिए त्रैराशिक करना। मनुष्य राशि का जितना प्रमाण है उसकी एक गुणकार शलाका तो संपूर्ण राशिमें कितनी गुणकारशलाका प्राप्त होगी है।

$$\text{मनुष्य राशि} = \frac{\text{जगत्प्रेणी} \times \text{सूच्यंगुल का प्र.मू} \times \text{द्वि.मू}}{\text{प्र.मू} \times \text{द्वि.मू}}$$

नारक राशि = जगत्प्रेणी x सूच्यंगुल प्र.मू x द्वि.मू
 नारकराशि की विष्कंभसूची सूच्यंगुल प्र.मू x द्वि.मू है।
 त्रैराशिक

प्रमाण	फलराशि	इच्छाराशि
मनुष्यराशि	9 गुणकार	नारकराशि
जगत्प्रेणी	शलाका	जगत्प्रेणी x सूच्यं प्र.मू x द्वि.मू.
सूच्यं प्र.मू x द्वि.मू		

$$\text{फल} = \frac{\text{फल} \times \text{इच्छा}}{\text{प्रमाण}} = \frac{9 \times \text{जगत्प्रेणी} \times \text{सूच्यं प्र.मू} \times \text{द्वि.मू}}{\text{जगत्प्रेणी} \times \text{सूच्यं प्र.मू} \times \text{द्वि.मू}}$$

अपवर्तने करनेपर जगत्प्रेणी जगत्प्रेणिसे अपवर्तित होगी। भागहार का भागहार शक्ति का गुणकार होता है इस न्यायसे सूच्य मनुष्य अवहारकाल नारक विष्कंभसूची का गुणकार होगा। अतः

$$\text{गुणकार शलाका} = \text{सूच्यं प्र.मू} \times \text{द्वि.मू} \times \text{सूच्यं प्र.मू} \times \text{द्वि.मू}$$

जैसे $\frac{25E}{9E}$ इस राशिसे $25E \times 4$ यह राशि कितनी गुणी

है ऐसा पूछा तो प्रथम राशि के भ्रमहार को द्वितीय राशि के गुणकारसे गुणित करनेपर गुणकार का प्रमाण आता है

$9E \times 4 = 92E$ गुणकार का प्रमाण

प्रथम राशि $\frac{25E}{9E} = 9E$ द्वितीय राशि $25E \times 4 = 200E$

$9E \times 22E = 208E$

इसी प्रकार नारकियों से देव असंख्यातगुणे है।

दे. देवराशि = जगत्प्रतर नारकराशि जगत्प्रेणी \times सूयंप्रभू \times द्वि.मू
 $5453E$ प्रतरांगुल

प्रमाण फल इच्छा
नारकराशि गुणकार 9 देवराशि में कितने गुणकार

$\frac{\text{फल} \times \text{इच्छा}}{\text{प्रमाण}} = \text{लब्ध}$ $\frac{9 \times \text{जगत्प्रतर} \times \text{जगत्प्रेणि}}{5453E \text{ प्रतरांगुल} \times \text{जगत्प्रेणी} \times \text{सूयंप्रभू} \times \text{द्वि.मू}}$
= $\frac{\text{जगत्प्रेणि}}{5453E \text{ प्रतरांगुल} \times \text{सूयंप्रभू} \times \text{द्वि.मू}}$ गुणकार का प्रमाण
 $\frac{\text{जगत्प्रेणि}}{\text{देव अवतारकाल} \times \text{नारक विष्कभसूयी}}$

जीविका नाम	गुणे	गुणकारका प्रमाण
मनुष्यनी	सबसे कम	जगत्प्रेणिके असंख्यातके भागप्रमाण जगत्प्रेणिके प्रथम वर्गमूल
मनुष्य	असंख्यात	1
नारकी	असंख्यात	पूर्वकिन्
पंचंद्रिय तिर्यच योनिनी	असंख्यात	जगत्प्रेणिके असंख्यात प्रथम वर्गमूल
देव	संख्यात	यथायोग्य संख्यात
देवियां	संख्यात	बत्तीस या संख्यात
सिद्ध	अनन्त	सिद्ध ÷ देवी
तिर्यच	अनन्त	तिर्यच ÷ सिद्ध = जीवराशि के वर्गमूलसे अनन्तगुणे

मनुष्यनी से मनुष्य असंख्यातगुणे है। गुणकारका प्रमाण त्रैशशिक विधिसे-

प्रमाण	फल	इच्छा	
मनुष्यनीमें	गुणकार 9	मनुष्य राशिमें	कितने गुणकार ?
संख्यात	9	अगल्प्रेणी	= अगल्प्रेणी
		सूच्यं.प्र.मू.वृ.मू.	सूच्यं.प्र.मू.वृ.मू.मनुष्यनी

प्रमाण फल इच्छा
नारकराशि गुणकार 9 पंचेन्द्रिय तिर्य्य योनिनी में कितने गुणकार ?

पंचेन्द्रिय योनिनी तिर्य्य = गुणकार शलाका = अगल्प्रेतर

नारकराशि = अगल्प्रेणि

पंचे.षो.ति. अवहार काल × नारक विष्कंमसूची 600 यो.अं. × सूच्यं.प्र.मू.वृ.मू. × 2

पृ.पृ 26

इन्द्रियमार्गणाका अल्पबहुत्व

प्रथम प्रकार	जीवोंका नाम	अल्पबहुत्व	गुणकार या विशेष अधिक का प्रमाण
	पंचेन्द्रिय	सबसे कम	पंचेन्द्रिय ÷ आवलीका असंख्यातका भाग
	चतुरिन्द्रिय	विशेष अधिक	चतुरिन्द्रिय ÷ " " "
	त्रीन्द्रिय	" "	त्रीन्द्रिय ÷ " " "
	द्वीन्द्रिय	" "	" " "
	अनिन्द्रिय	अनन्तगुणे	अप्रव्यजीवोंसे अनन्तगुणा
	एकेन्द्रिय	"	सर्वजीवराशिके प्रथम वर्गभूलसे अनन्तगुणा
दूसरा प्रकार	चतुरिन्द्रिय पर्याप्त	सबसे कम	चतुरिन्द्रिय पर्याप्त ÷ आवली
	पंचेन्द्रिय पर्याप्त	विशेष अधिक	असंख्यात
	द्वीन्द्रिय पर्याप्त	" "	पंचेन्द्रिय पर्याप्त ÷ " "
	त्रीन्द्रिय पर्याप्त	" "	द्वीन्द्रिय पर्याप्त ÷ " "
	पंचेन्द्रिय अपर्याप्त	असंख्यातगुणे	आवली ÷ असंख्यात
	चतुरिन्द्रिय " "	विशेष अधिक	पंचेन्द्रिय अपर्याप्त ÷ आवलीका असंख्यातका भाग
	त्रीन्द्रिय अपर्याप्त	" "	चतुरिन्द्रिय " ÷ " "
	द्वीन्द्रिय " "	" "	त्रीन्द्रिय " ÷ " "

जीवोंका नाम	अल्पबहुत्व	गुणकार व विशेष अधिक का प्रमाण
अनिन्द्रिय	अनन्तगुणे	
बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त	»	सर्व जीवराशि ÷ असंख्यात
बादर » अपर्याप्त	असंख्यातगुणे	असंख्यात लोकप्रमाण
बादर एकेन्द्रिय	विशेष अधिक	बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंका प्रमाण
सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त	असंख्यातगुणे	असंख्यात लोक
सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त	संख्यातगुणे	
सूक्ष्म एकेन्द्रिय	विशेष अधिक	सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त राशि
एकेन्द्रिय जीव	विशेष अधिक	बादर एकेन्द्रिय जीवोंका प्रमाण

कायमार्गणामें अल्पबहुत्व

प्रथम प्रकार

जीवोंका नाम	अल्पबहुत्व	गुणकार व विशेष अधिक का प्रमाण
प्रसकायिक	सबसे कम	
तेजस्कायिक	असंख्यातगुणे	असंख्यात लोक
पृथिवीकायिक	विशेष अधिक	तेजस्कायिक राशि ÷ असंख्यात लोक
अप्कायिक	» »	पृथिवीकायिक ÷ " "
वायुकायिक	» »	अप्कायिक ÷ " "
अकायिक	अनन्तगुणे	अमव्यजीव x अनन्त
वनस्थितिकायिक	»	सर्वजीवराशिका प्रथम वर्गमूल x अनन्त

द्वितीय प्रकार

जीवोंका नाम	अल्पबहुत्व	गुणकार व विशेष अधिक का प्रमाण
प्रसकायिक पर्याप्त	सबसे कम	पर्याप्त
प्रसकायिक अपर्याप्त	असंख्यातगुणे	प्रसूजीवोंका प्रमाण = जगत्प्रतर ÷ प्रतरांगुल संख्यात
तेजस्कायिक अपर्याप्त	»	आवली ÷ असंख्यात
पृथिवीकायिक »	विशेष अधिक	असंख्यात लोक
अप्कायिक »	»	तेजस्कायिक अपर्याप्त ÷ असंख्यात लोक
वायुकायिक »	»	पृथिवीकायिक " ÷ " "
तेजस्कायिक पर्याप्त	संख्यातगुणे	अप्कायिक " ÷ " "
पृथिवीकायिक पर्याप्त	विशेष अधिक	संख्यात
अप्कायिक पर्याप्त	» »	तेजस्कायिक पर्याप्त ÷ असंख्यात लोक
वायुकायिक पर्याप्त	» »	पृथिवीकायिक पर्याप्त ÷ " "
अकायिक	अनन्तगुणे	अप्कायिक " ÷ " "
		अकायिक ÷ वायुकायिक पर्याप्त
		अनन्त ÷ असंख्यात लोक

जीवोंका नाम	अल्पकहुल	गुणकार व विशेष अधिकका प्रमाण
वनस्पतिकायिक अपर्याप्त	अनन्तगुणे	राशिका सर्व जीव प्रथम वर्गमूल \times अनन्त
पर्याप्त	संख्यातगुणे	संख्यात समथ
वनस्पतिकायिक	विशेष अधिक	वनस्पति अपर्याप्त जीवोंका प्रमाण
निगोदजीव	" "	बादर निगोद प्रतिष्ठित प्रत्येक शरीरजीव
तृतीय प्रकार	प्रसकारिक	
बादर तेजस्कायिक	असंख्यातगुणे	संख्यात लोक
बादर वनस्पति प्रत्येक शरीर	असंख्यातगुणे	" " गुणकारके अर्धच्छेद
निगोद प्रतिष्ठित बादर निगोद	असंख्यातगुणे	" " पत्त्यापमे \div असंख्यात
जीव (सप्रतिष्ठित प्रत्येक)		" "
बादर पृथिवीकायिक	असंख्यातगुणे	" "
बादर अष्कायिक	" "	" "
बादर वायुकायिक	" "	" "
सूक्ष्म तेजस्कायिक	" "	असंख्यात लोक असंख्यात लोक
सूक्ष्म पृथिवीकायिक	विशेष अधिक	सूक्ष्म तेजस्कायिक \div असंख्यात लोक
सूक्ष्म अष्कायिक	" "	सूक्ष्म पृथिवीकायिक \div " "
सूक्ष्म वायुकायिक	" "	सूक्ष्म अष्कायिक \div " "
अकायिक	अनन्तगुणे	अभ्रव्यजीव \times अनन्त
बादर वनस्पतिकायिक	" "	सर्वजीवराशिका प्रथम वर्गमूल \times अनन्त
सूक्ष्म वनस्पतिकायिक	असंख्यातगुणे	असंख्यात लोक
वनस्पतिकायिक	विशेष अधिक	बादर वनस्पतिकायिक जीवोंका प्रमाण
निगोद जीव	" "	

वनस्पति कायिक जीवोंमें केवल साधारण वनस्पति ग्रहण करना और निगोद जीवोंमें साधारण वनस्पति सहित बादर निगोद प्रतिष्ठित व अप्रतिष्ठित जीव ग्रहण करना। आधारमें आधेयका उपचार करनेसे बादर निगोद प्रतिष्ठित व अप्रतिष्ठित जीवोंके निगोदपना कहा है। एक अत्यार्थकी अपेक्षासे सगुण प्रत्येक शरीर वनस्पति आधार है और निगोद जीव आधेय है। प्रत्येक शरीर वनस्पतिके आधारसे बादर निगोद जीव रहते हैं।

जीवोंका नाम	अल्पबहुत्व	गुणकारका व विशेष अधिकका प्रमाण
पेक्षा प्रकार		
बादर तेजस्कायिक पर्याप्त	सबसे स्तोक	जगत्प्रतर :- असंख्यात
त्रसकायिक पर्याप्त	असंख्यातगुणे	आवली :- असंख्यात
त्रसकायिक अपर्याप्त	"	पल्योपम :- असंख्यात
बां. वन. प्रत्येकशरीर पर्याप्त	"	आवली :- असंख्यात
बा.नि.प्रति. पर्याप्त	"	" "
बा. पृथिवी. पर्याप्त	"	" "
बादर अप्. "	"	" "
बादर वायु. "	"	असंख्यात जगत्प्रेणी / असंख्यातका
	"	प्रमाण प्रतरांगुल :- असंख्यात
बादर तेज. अपर्याप्त	"	असंख्यात लोक
अप्रतिष्ठित वा. वन. प्रत्येक. अपर्याप्त	"	" "
सप्रतिष्ठित विगोदप्रतिष्ठित बा.नि.अप.	"	" "
बादर पृथ्वी. अपर्याप्त	"	" "
बादर अकायिक "	"	" "
" वायु. "	"	" "
सूक्ष्म तेजस्कायिक "	"	" "
सूक्ष्म पृथ्वी "	विशेष अधिक	सू.तेज.अपर्याप्त :- असंख्यात लोक
सूक्ष्म अप्. "	" "	सू.पृथ्वी.अपर्याप्त :- " "
सूक्ष्म वायु. "	" "	सू.अप्.अपर्याप्त :- " "
सूक्ष्म तेज. पर्याप्त	संख्यातगुणे	संख्यात समय
सूक्ष्म पृथ्वी. "	विशेष अधिक	सू.तेज.पर्याप्त :- " "
सूक्ष्म अप्. "	" "	सू.पृथ्वी.पर्याप्त :- " "
सूक्ष्म वायु. "	" "	सू.अप्.पर्याप्त :- " "
अकायिक	अनन्तगुणे	अभव्यजीव x अनन्त
बा. वनस्पति पर्याप्त	"	सर्व जीवोंका प्रथम वर्गमूल x अनन्त
" " अपर्याप्त	असंख्यातगुणे	असंख्यात लोक
बादर वनस्पति	विशेष अधिक	बादर वनस्पति पर्याप्त जीवप्रमाण
सूक्ष्म वनस्पति अपर्याप्त	असंख्यातगुणे	असंख्यात लोक
सूक्ष्म वनस्पति पर्याप्त	संख्यातगुणे	संख्यात समय
सूक्ष्म वनस्पति	विशेष अधिक	सूक्ष्म वनस्पति अपर्याप्तजीव
वनस्पतिकायिक	विशेष अधिक	बादर वनस्पति कायिकजीव
विगोद जीव	विशेष अधिक	बा. वन. प्रत्येक + बा. नि. प्रति. प्रत्येक

योगमार्गिका में अल्पबहुत्व

जीवोंका नाम	अल्पबहुत्व	गुणकारका व विशेष अधिकका प्रमाण
मनोयोगी	सबसे कम	मनोयोगीका प्रमाण = देव ÷ संख्यात
वचनयोगी	संख्यातगुणे	संख्यातप्रतरांगुल ÷ प्रतरांगुलका संख्यातका
अयोगी	अनन्तगुणे	अभव्यराशि × अनन्त
काययोगी	"	सर्वजीवराशिका प्रथम वर्गमूल × अनन्त
आहारक मिश्रकाययोगी	सबसे कम	
आहारक काययोगी	संख्यातगुणे	दो
वैक्रियिक मिश्रकाययोगी	असंख्यातगुणे	जगत्प्रतर ÷ असंख्यात
सत्य मनोयोगी	संख्यातगुणे	काल संख्यातगुणा है और वाक भी संख्यातगुणे
असत्य मनोयोगी	संख्यातगुणे	है अतः जीवोंकी संख्या भी संख्यातगुणी है
उभय मनोयोगी	संख्यातगुणे	"
अनुभय "	संख्यातगुणे	"
मनोयोगी	विशेष अधिक	सत्य + असत्य + उभय मनोयोगियोंका प्रमाण
सत्य वचनयोगी	संख्यातगुणे	
असत्य वचनयोगी	" "	
उभय वचनयोगी	" "	
वैक्रियिक काययोगी	" "	
अनुभय वचनयोगी	" "	
वचनयोगी	विशेष अधिक	सत्य + असत्य + उभय वचनयोगियोंका प्रमाण
अयोगी	अनन्तगुणे	अभव्यराशि × अनन्त
कार्मण काययोगी	"	सर्व जीवराशिका प्रथम वर्गमूल × अनन्त
		सर्व जीवराशि ÷ अन्तर्मुहूर्त × अयोगी राशि
औदारिक मिश्रकाययोगी	असंख्यातगुणे	अन्तर्मुहूर्त
औदारिक काययोगी	संख्यातगुणे	
काययोगी	विशेष अधिक	औदारिक काययोगी छोड़कर विशेष काययोगियोंका प्रमाण

वेदमार्गिणा में अल्पबहुत्व

जीवोंका नाम	अल्पबहुत्व	गुणकार व विशेष अधिक का प्रमाण
पुरुषवेदी	सबसे कम	पुरुषवेदीका प्रमाण = जगत्प्रतर
स्त्रीवेदी	संख्यातगुणे	असंख्यात प्रतरांगुल
अपगतवेदी	अनन्तगुणे	अभव्यराशि X अनन्त
नपुंसकवेदी	अनन्तगुणे	सर्वजीवराशिका प्रथम वर्गमूल X अनन्त
संज्ञी नपुं. गर्भोपक्रान्तिक	सबसे कम	जगत्प्रतर ÷ असंख्यात प्रतरांगुल
संज्ञी पुरुषवेदी गर्भज	संख्यातगुणे	
संज्ञी स्त्रीवेदी	" "	
संज्ञी नपुंसक. सम्पूर्द्धिम पर्याप्त	संख्यातगुणे	
संज्ञी नपुं. सम्पूर्द्धिम अपर्याप्त	असंख्यातगुणे	आवली ÷ असंख्यात
संज्ञी स्त्रीवेदी गर्भज असंख्यात वर्षायुक्	असंख्यातगुणे	पत्योपम ÷ असंख्यात (संख्यात प्रतरांगुल)
" पुंवेदी "	समान	
असंज्ञी नपुं. गर्भज	संख्यातगुणे	
" पुंवेदी "	"	
असंज्ञी स्त्रीवेदी	"	
असंज्ञी नपुं. सम्पूर्द्धिम पर्याप्त	"	संख्यात समय
" " " अपर्याप्त	असंख्यातगुणे	आवली ÷ असंख्यात

असंख्यात वर्षायुक् अर्थात् भोगभूमिज जीव । वहांपर नपुंसकवेदी, सम्पूर्द्धिम और असंज्ञी जीव होते ही नहीं । टाई द्वीप में 30 भोगभूमियां है और टाई द्वीपके बाहर असंख्यात द्वीपोंमें जधन्व भोगभूमि है । वहांपर संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्य्य सामान्य कर्मभूमि गर्भोपक्रान्तिक पर्याप्त स्त्रीवेदी और पुरुषवेदी गर्भज ही होते है । अतः * * * उनको संख्या बहुत है ।

कर्मभूमि में संज्ञी पंचेन्द्रियोंसे असंज्ञी पंचेन्द्रियोंकी संख्या अधिक है ।

कषायरहित जीव	सबसे कम	
मानकषायी "	अनन्तगुणे	सर्व जीवराशिका प्रथम वर्गमूल X अनन्त
क्रोधकषायी "	विशेष अधिक	मानकषायी ÷ आवलीका असंख्यातवा भाग
मायाकषायी "	" "	क्रोधकषायी ÷ " 1 3
लोभकषायी "	" "	मायाकषायी ÷ " 2 3

ज्ञानमार्गणा

जीवोंका नाम	अल्पबहुत्व	गुणकार व विशेष अधिक का प्रमाण
मनःपर्ययज्ञानी अवधिज्ञानी मलेशानी, श्रुतज्ञानी विभंगज्ञानी केवलज्ञानी मायज्ञानी, श्रुताज्ञानी	सबसे कम असंख्यातगुणे विशेष अधिक असंख्यातगुणे अनन्तगुणे)	पल्योपम \div (संख्यात \times आवली का असंख्यात व अवधिज्ञान से रहित तिर्य्य व मनुष्य सम्यक् जगत्प्रतर \div पल्योपम के असंख्यात व भागप्र अभव्य \times अनन्त, सिद्ध \div असंख्यात सर्व जीवराशि का प्रथम वर्गमूल \times अनन्त

संयममार्गणा

प्रकार पहिला	संयत जीव संयतासंयत सिद्ध जीव न संयत, न असंयत	असंयत
	सबसे कम असंख्यातगुणे अनन्तगुणे	अनन्तगुणे
	पल्योपम \div (संख्यात \times असंख्यात आवली अभव्य \times अनन्त	सब जीवराशि प्रथम वर्गमूल \times अनन्त

प्रकार दुसरा	सूक्ष्मसांपरायिक संयत परिलारविशुद्धि संयत यथाख्यातविहारशुद्धि संयत शाभायिक छेदोपस्थापना शुद्धिसंयत संयत जीव संयतासंयत सिद्ध जीव असंयत	असंयत
	सबसे कम संख्यातगुणे संख्यातगुणे संख्यातगुणे विशेष अधिक असंख्यातगुणे अनन्तगुणे अनन्तगुणे	अनन्तगुणे
	संख्यात समय संख्यात समय " " उपरके तीन संयतोंका प्रमाण पल्योपम \div असंख्यात अभव्य \times अनन्त	

दर्शन मार्गणा	अवधिदर्शनी चक्षुदर्शनी केवलदर्शनी अचक्षुदर्शनी	असंयत
	सबसे कम असंख्यातगुणे अनन्तगुणे अनन्तगुणे	अनन्तगुणे
	जगत्प्रतर \div असंख्यात प्रतरांगुल अभव्य \times अनन्त सर्व जीवराशि का प्रथम वर्गमूल \times अनन्त	

लेश्यामार्गणा

जीवोंका नाम	उत्पन्नहुल	गुणकारका व विशेष अधिककाप्रमाण
शुक्ललेश्यावाले	सबमें स्तोक	पल्योपम ÷ असंख्यात = शुक्ललेश्यावाले जीव
पद्मलेश्यावाले	असंख्यातगुणे	जगत्प्रतर ÷ पल्योपम असंख्यात × प्रतरांगुल
तेजोलेश्यावाले	संख्यातगुणे	
लेश्यारहित (अयोधीव सिद्ध)	अनन्तगुणे	अभव्य × अनन्त
कापोतलेश्यावाले	अनन्तगुणे	सर्वजीवोंका प्रथम वर्गमूल × अनन्त
नीललेश्यावाले	विशेष अधिक	कापोतलेश्यावाले ÷ आवलीका असंख्यातवा भाग
कृष्णलेश्यावाले	विशेष अधिक	नीललेश्यावाले ÷ " "

भव्यमार्गणा

अभव्य सिद्धिक	सबसे स्तोक	जघन्य युक्तानन्तप्रमाण अभव्यजीवोंका प्रमाण
सिद्ध जीव	अनन्तगुणे	अभव्य × अनन्त
भव्यसिद्धिक	अनन्तगुणे	

सम्यक्त्व मार्गणा

सम्यग्मिथ्यादृष्टि	सबमें स्तोक	
सम्यग्दृष्टि	असंख्यातगुणे	आवली ÷ असंख्यात
सिद्ध जीव	अनन्तगुणे	अभव्य × अनन्त
मिथ्यादृष्टि	अनन्तगुणे	सर्व जीवोंका प्रथम वर्गमूल × अनन्त

अन्यप्रकारसे

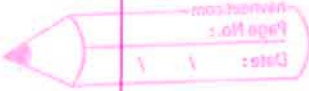
सासादन सम्यग्दृष्टि	सबमें स्तोक	
सम्यग्मिथ्यादृष्टि	संख्यातगुणे	
उपशम सम्यग्दृष्टि	असंख्यातगुणे	आवली ÷ असंख्यात
क्षायिक "	"	" "
वेदक "	"	" "
सम्यग्दृष्टि	विशेष अधिक	उपशम सम्यग्दृष्टि + क्षायिक सम्यग्दृष्टि
सिद्ध	अनन्तगुणे	
मिथ्यादृष्टि	अनन्तगुणे	

संज्ञीमार्गणा

संज्ञी जीव	सबमें स्तोक	
न संज्ञी, न असंज्ञी	अनन्तगुणे	अभव्य × अनन्त
असंज्ञी जीव	अनन्तगुणे	सर्व जीवोंका प्रथम वर्गमूल × अनन्त

आहार मार्गणा

अनाहारक अन्धक	सबसे स्तोक	
अनाहारक बन्धक	अनन्तगुणे	सर्व जीवोंका प्रथम वर्गमूल × अनन्त
आहारक	असंख्यातगुणे	अन्तर्मुहूर्त



जीवोंका नाम	अल्पबहुत्व	गुणकार व विशेष अधिकता प्रमाण
मनुष्य पर्याप्त गर्भज	सबसे स्तोक	
मनुष्यनी	संख्यातगुणी	तीन
सर्वार्थसिद्धिके देव	संख्यातगुणे	तीन अथवा सात अथवा संख्यात
बादर तेजस्वयिक पर्याप्त	असंख्यातगुणे	असंख्यात प्रतरावली
चार अनूत्तरवासी देव	असंख्यातगुणे	पत्थोपम \div असंख्यात = असंख्यात पत्थोपम
अनुदिशा विमानवासी देव	संख्यातगुणे	संख्यात समयप्रमाण
उपरिम-उपरिम श्रेयिक देव	"	"
उपरिम-मध्यम श्रेयिक देव	"	"
उपरिम-अधस्तन	"	"
मध्यम-उपरिम	"	"
मध्यम-मध्यम	"	"
मध्यम-अधस्तन	"	"
अधस्तन-उपरिम	"	"
अधस्तन-मध्यम	"	"
अधस्तन-अधस्तन	"	"
आरुण - अव्युत कल्प देव	"	"
आनत - प्राणत कल्पवासी देव	"	"
सप्तम पृथिवी नारकी	असंख्यातगुणे	जगत्त्रेणी \div असंख्यात = असंख्यात पथोपम
छठी	"	जगत्त्रेणी का तृतीय वर्गमूल
शतार सहस्रार कल्प देव	"	जगत्त्रेणी का चतुर्थ वर्गमूल
शुक्र महाशुक्र	"	"
पंचम पृथिवीके नारकी	"	"
मानव कापिष्ठ कल्पवासी देव	"	"
चतुर्थ पृथिवीके नारकी	"	"
ब्रह्म ब्रह्मोत्तर कल्प देव	"	"
तृतीय पृथिवीके नारकी	"	"
मालेन्द्र कल्पवासी देव	"	"
मानकुमार	संख्यातगुणे	संख्यात समय
द्वितीय पृथिवीके नारकी	असंख्यातगुणे	जगत्त्रेणी बारहवा वर्गमूल \div जगत्त्रेणी 92 वा वर्गमूल \div असंख्यात
मनुष्य अपर्याप्त	"	जगत्त्रेणी 92 वा वर्गमूल \div मनुष्य अपर्याप्तोंका अवतारकाल

जीविका नाम	अल्पवहुत्व	गुणकार व विशेष अधिकता प्रमाण
ईशान कल्पवासी देव	असंख्यातगुणे	सूच्यंगुल - संख्यात
ईशान कल्पवासिनी देवियां	संख्यातगुणी	संख्यात समय
सौधर्म कल्पवासी देव	संख्यातगुणे	" "
सौधर्म कल्पवासिनी देवियां	संख्यातगुणी	" "
प्रथम पृथिवीके नारकी	असंख्यातगुणे	घनांगुल का तृतीय वर्गमूल + उसका ही संख्यातका भाग
भवनवासी देव	असंख्यातगुणे	घनांगुल द्वितीय वर्गमूल - संख्यात
भवनवासिनी देवियां	संख्यातगुणी	संख्यात समय
पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिनी	असंख्यातगुणी	जगत्प्रेणी - असंख्यात
वानव्यन्तर देव	संख्यातगुणे	संख्यात समय
वानव्यन्तर देवियां	संख्यातगुणी	" " अथवा 32
ज्योतिषी देव	संख्यातगुणे	वानव्यन्तर अवहार - ज्योतिषी देव अवहारकाल
ज्योतिषी देवियां	संख्यातगुणी	संख्यात समय / 32
चतुरिन्द्रिय पर्याप्त जीव	संख्यातगुणे	" "
पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव	विशेष अधिक	चतुरिन्द्रिय पर्याप्त + असंख्यात
द्वीन्द्रिय " "	" "	पंचेन्द्रिय पर्याप्त - आवली असंख्यात
त्रीन्द्रिय " "	" "	द्वीन्द्रिय पर्याप्त जीव - "
पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीव	असंख्यात गुणे	आवली - असंख्यात
चतुरिन्द्रिय " "	विशेष अधिक	पंचेन्द्रिय अपर्याप्त + (आवली - असंख्यात)
त्रीन्द्रिय " "	" "	चतुरिन्द्रिय " - " "
द्वीन्द्रिय " "	" "	त्रीन्द्रिय अपर्याप्त - " "
बादर वन प्रत्येक शरीर पर्याप्त	असंख्यातगुणे	पलथोपम - असंख्यात
बादर निगोदप्रतिष्ठित "	"	आवली - असंख्यात
बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त	"	" "
" अप्कायिक "	"	" "
" वायुकायिक "	"	प्रतरांगुल के असंख्यातवे भागप्रमाण
" तेजस्कामिक	"	असंख्यात जगत्प्रेणियां
" तेजस्कायिक अपर्याप्त	"	असंख्यात लोक
बादर वन प्रत्येक शरीर अपर्याप्त	"	" "
" निगोदप्रतिष्ठित अपर्याप्त	"	" "

जीवोंका नाम	अल्पबहुल	गुणकार व विशेष अधिका प्रमाण
बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्त	असंख्यातगुणे	असंख्यात लोक
बादर अष्कायिक "	"	असंख्यात "
बादर वायुकायिक "	"	" "
सूक्ष्म तेजस्कायिक अपर्याप्त	"	" "
" पृथिवीकायिक अपर्याप्त	विशेष अधिक	सूक्ष्म तेजस्कायिक अपर्याप्त ÷ असंख्यात लोक
सूक्ष्म अष्कायिक अपर्याप्त	विशेष अधिक	सूक्ष्म पृथ्वी. अपर्याप्त ÷ असंख्यात लोक
सूक्ष्म वायुकायिक अपर्याप्त	" "	" अप्. " ÷ " "
" तेजस्कायिक पर्याप्त	संख्यातगुणे	संख्यात समय
" पृथ्वीकायिक "	विशेष अधिक	सूक्ष्म तेज. पर्याप्त ÷ असंख्यात लोक
" अष्कायिक "	" "	सूक्ष्म पृथ्वी. पर्याप्त ÷ " "
" वायुकायिक "	" "	सूक्ष्म अप्. पर्याप्त ÷ " "
अकायिक	अनन्तगुणे	अभव्य x अनन्त
बादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्त	असंख्यातगुणे	असंख्यात लोक
बादर वनस्पतिकायिक	विशेष अधिक	बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीवोंका प्रमाण
सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्त	असंख्यातगुणे	असंख्यात लोक
" " पर्याप्त	संख्यातगुणे	संख्यात समय
सूक्ष्म वनस्पतिकायिक	विशेष अधिक	सूक्ष्म वनस्पति अपर्याप्त जीवोंका प्रमाण
वनस्पतिकायिक	" "	बादर " जीवोंके बराबर
निगोद जीव	" "	बादर निगोद प्रतिष्ठित वा. वन. प्रत्येक शरीर जीवप्रमाण